www.sanjanabharati.com

दिल्ली और गौतम बुद्ध नगर से प्रकाशित। हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड व उत्तराखंड में प्रसारित

facebook.com/Sanjanabharati

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

संजना भारती

RNI No. : DELHIN/2016/70240

आपका भरोसा, हमारी ताकत

2 मोदी-शाह फॉर्मूले के हिंदी क्षेत्र के बाहर...

3 किठाना स्वास्थ्य केंद्र पर बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ...

4 जल्द रिलीज होगा कुणाल खेमू स्टारर सिंगल...

वर्ष: 10 | अंक: 76 | दिल्ली, गुरुवार, 8 जनवरी 2026 | पृष्ठ संख्या: 4 | मूल्य: 1 रुपया

संक्षिप्त समाचार

शॉर्ट सर्किट से घर में लगी आग, दो साल की बच्ची की झुलसने से मौत

इटावा (एजेन्सी)। उत्तर प्रदेश के इटावा जिले में बुधवार को एक घर में संदिग्ध रूप से शॉर्ट सर्किट से लगी आग में झुलस कर दो साल की एक बच्ची की मौत हो गई। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि बकिवार थाना क्षेत्र के भवानीपुर गांव में एक घर के अंदर संदिग्ध रूप से शॉर्ट सर्किट होने के कारण चारपाई पर सो रही शान्या नाम की दो साल की एक बच्ची की मौत हो गई। पुलिस के मुताबिक, घटना के वक्त बच्ची का पिता आदित्य कुमार काम के सिलसिले में बाहर गया था जबकि उसकी मां छत पर उपले बनाने गई थी। पुलिस ने बताया कि धुआं उठते देख वह नीचे पहुंची और शोर मचाया, जिसके बाद आसपास के लोग मौके पर पहुंचे और पानी डालकर आग बुझाई लेकिन तब तक बच्ची की झुलसकर मौत हो चुकी थी। घटना की सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने बच्ची के शव को पोस्टमार्टम के लिये भेज दिया। पुलिस ने बताया कि आग लगने का कारण प्रथम दृष्टया शार्ट सर्किट प्रतीत होता है।

अमेठी में व्यक्ति की हत्या कर शव को नदी में फेंका, जांच जारी

अमेठी (एजेन्सी)। उत्तर प्रदेश के अमेठी जिले में एक व्यक्ति की हत्या कर शव को नदी में फेंक दिया गया। पुलिस ने बुधवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि बुधवार को शव बरामद कर मामले की जांच शुरू कर दी गयी है। पुलिस के मुताबिक, घटना शुकुल बाजार थानाक्षेत्र के गांव खेममऊ मल्लाहन का पुरवा के पास की है। पुलिस ने बताया कि मृतक की पहचान गांव के ही रहने वाले रमेश कुमार मल्लाह (45) के रूप में हुई है। पुलिस के मुताबिक, वह मंगलवार शाम को अपने घर से निकला था लेकिन जब वह वापस नहीं लौटा तो परिवार के सदस्यों ने उसे ढूंढना शुरू किया। परिवार और गांव के लोगों ने बुधवार सुबह गोमती नदी के किनारे एक चप्पल, खून के धब्बे मिलने के बाद पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने बताया कि मौके पर पहुंचने के बाद पुलिस ने स्थानीय लोगों की मदद से शव को बाहर निकाला। पुलिस क्षेत्राधिकारी (मुसाफिरखाना) अतुल कुमार सिंह ने बताया कि शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया गया और मामले की जांच की जा रही है।

भारत की सभ्यतात्मक बुद्धिमत्ता कालातीत नेतृत्व की शिक्षा प्रदान करती है: उपराष्ट्रपति

संजना भारती/पीआईबी

नई दिल्ली। उपराष्ट्रपति सी. पी. राधाकृष्णन ने नई दिल्ली स्थित उपराष्ट्रपति आवास में आयोजित एक समारोह में हिंदोल सेनगुप्ता द्वारा लिखित गाओ, नाचो एवं नेतृत्व करोः श्रील प्रभुपाद के जीवन से नेतृत्व का सबक पुस्तक का विमोचन किया।

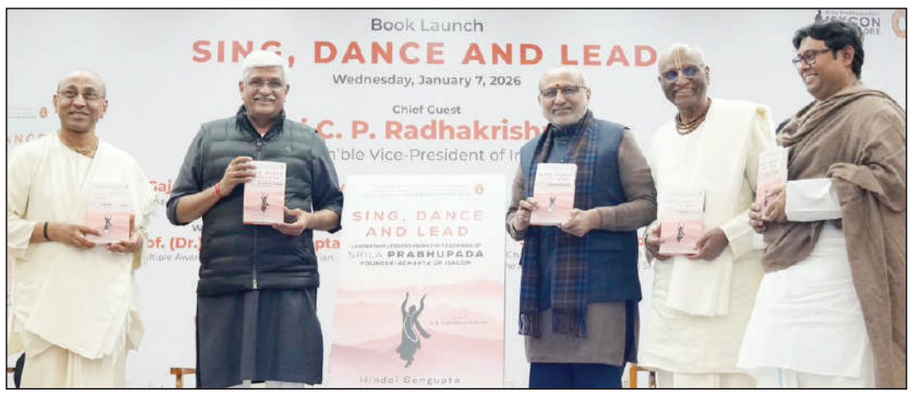

उपराष्ट्रपति ने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए भारत को एक सभ्यतागत नेता के रूप में वर्णित किया, जिसकी परंपराओं ने निरंतर मूल्यों, सेवा एवं आंतरिक अनुशासन पर आधारित नेतृत्व पर बल दिया है। उन्होंने कहा कि ए. सी. भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद का जीवन इस परंपरा में दृढ़ता के साथ खड़ा है, जो उद्देश्य, विनम्रता एवं नैतिक स्पष्टता पर आधारित नेतृत्व का उदाहरण प्रस्तुत करता है।

उपराष्ट्रपति ने उल्लेख किया कि स्वामी प्रभुपाद के विचार एवं शिक्षाएं तेजी से बदलती दुनिया में आज पहले से ज्यादा प्रासंगिक हैं। उन्होंने कहा कि स्वामी प्रभुपाद ने ऐसे संस्थान स्थापित किए जो पीढ़ियों तक मानवता की सेवा करते रहेंगे। राष्ट्रपति ने कहा कि उनके नेतृत्व का वास्तविक प्रमाण इस तथ्य में निहित है कि कई लोग उनका नाम नहीं जानते लेकिन उनके कार्य एवं इसके स्थायी प्रभाव से विश्व के लाखों लोग प्रभावित हैं।

उपराष्ट्रपति ने याद किया कि स्वामी प्रभुपाद ने अधिक उम्र में भी महाद्वीपों की असाधारण यात्रा की, जहां वह न केवल एक धार्मिक दर्शन बल्कि अनुशासन, भक्ति एवं आनंद पर आधारित जीवन शैली भी अपने साथ ले गए। 1966 में स्थापित इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर कृष्णा कॉन्शियसनेस (इस्कॉन) का उल्लेख करते हुए उपराष्ट्रपति ने कहा कि इसकी वैश्विक सफलता इस बात का प्रमाण है कि नेतृत्व अधिकार पर नहीं, बल्कि दृढ़ विश्वास, सेवा एवं स्पष्ट दृष्टिकोण पर आधारित है। उपराष्ट्रपति ने पुस्तक के मुख्य विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि गाओ, नाचो एवं नेतृत्व करो' एक सशक्त विचार प्रस्तुत करती है कि नेतृत्व आनंदमय, सहभागी और गहन मानवीय हो सकता है। उन्होंने कहा कि स्वामी प्रभुपाद ने आदेश से नहीं बल्कि प्रेरणा से नेतृत्व किया और सादगी एवं भक्ति में अडिग रहते हुए स्थायी संस्थाओं का निर्माण किया।

संत-कवि तिरुवल्लुवर की शिक्षाओं का उल्लेख करते हुए, उपराष्ट्रपति ने उजागर किया कि नेतृत्व की शुरूआत स्पष्ट सोच एवं उच्चतर आंतरिक दृष्टि से होती है, जिसे फिर सामूहिक कार्रवाई में बदलना चाहिए। उन्होंने कहा कि यह पुस्तक स्वामी प्रभुपाद के जीवन को नैतिक एवं परिवर्तनकारी नेतृत्व के एक अध्ययन के रूप में प्रभावी तरीके से प्रस्तुत करती है, जो इतिहास, दर्शन एवं समकालीन नेतृत्व संबंधी विचारों को आपस में जोड़ती है।

उपराष्ट्रपति ने कहा कि इस प्रकार के कार्य विशेष रूप से उन लोगों के लिए बहुत प्रासंगिक हैं जो सार्वजनिक जीवन में शामिल हैं, जहां लोकतांत्रिक संस्थाएं विश्वास, संयम एवं सेवा की भावना पर फलती-फूलती हैं।

सरकार की प्रभावी नीतियों से उत्तर प्रदेश के रियल एस्टेट में 53% की वृद्धि

संजना भारती संवाददाता

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व वाली उप्र सरकार द्वारा प्रदेश की टाउनशिप नीति को बेहतर करने का नतीजा यहां रियल एस्टेट के क्षेत्र में अद्वितीय वृद्धि के रूप में देखने को मिल रहा है। उत्तर प्रदेश रियल एस्टेट विनियामक प्राधिकरण (यूपी रेरा) द्वारा जारी एक रिपोर्ट के मुताबिक वर्ष 2025 में प्रदेश के रियल एस्टेट में 68 हजार 328 करोड़ रुपये का पूंजी निवेश हुआ है जो 2024 में 44 हजार 526 करोड़ रुपये था। यानी निवेश में 53.5% की प्रतिशत की शानदार वृद्धि दर्ज हुई है। प्रदेश में बीते एक वर्ष में रिकॉर्ड 309 परियोजनाएं पंजीकृत हुई हैं जो उप्र सरकार की नीतियों के प्रति निवेशकों के भरोसे को दर्शाती हैं।

'यूपी में बढ़ा निवेशकों का भरोसा, एक साल में 309 परियोजनाएं पंजीकृत'

सरकार ने बीते वर्ष टाउनशिप नीति में परिवर्तन करके बिल्डरों के लिए न्यूनतम 25 एकड़ में टाउनशिप बनाने की बाध्यता समाप्त की थी और ये छूट दी गई थी कि वे न्यूनतम 12.5 एकड़ पर टाउनशिप बना सकेंगे। इसके अलावा नई टाउनशिप नीति में आवंटियों के हितों का ध्यान भी रखा गया। 25 एकड़ की टाउनशिप को तीन साल में और इससे ज्यादा की टाउनशिप को अधिकतम 5 साल में पूरा करने के नियम बनाए गए। जबकि पहले की नीतियों के चलते कई परियोजनाएं 8 से 12 साल की अवधि में भी पूरी नहीं हो पाईं और आवंटियों का पैसा फंस गया। टाउनशिप नीति में बदलाव निवेशकों के साथ-साथ आवंटियों के लिए राहत देने वाला सिद्ध हो रहा है।

कुछ समय पहले तक एनसीआर यानी नेशनल कैपिटल रीजन उत्तर प्रदेश के रियल एस्टेट क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा था, लेकिन वर्ष 2025 के आंकड़े ये बताते हैं अब निवेशकों का रुझान गैर-एनसीआर जिलों और उप्र के छोटे जनपदों की ओर भी बढ़ रहा है। वर्ष 2025 में पंजीकृत हुई कुल 308 परियोजनाओं में से 122 एनसीआर में और 186 परियोजनाएं गैर-एनसीआर क्षेत्रों में स्वीकृत हुई हैं। इससे स्पष्ट होता है कि उप्र सरकार द्वारा किए गए बुनियादी ढांचे के विकास, बेहतर कनेक्टिविटी और टियर-2 शहरों के विस्तार का रियल एस्टेट के क्षेत्र में सकारात्मक असर पड़ा है।

उप्र की राजधानी लखनऊ बीते वर्ष में 67 परियोजनाओं के साथ एक प्रमुख केंद्र बनकर उभरी है। वहीं अन्य शहरों की बात करें तो बरेली में 15 और आगरा में 14 परियोजनाएं रजिस्टर्ड हुई हैं।

प्रदेश के बजट को रोजगार परक और उद्योगों के अनुकूल बनाना सरकार का लक्ष्य-मुख्यमंत्री

औद्योगिक विकास के लिए बजट प्रावधानों में होगा विशेष फोकस-मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी

संजना भारती संवाददाता

चंडीगढ़। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि उद्योग एवं विनिर्माण क्षेत्र का प्रदेश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान है। आर्थिक विकास के दृष्टिकोण से राज्य के आगामी बजट में औद्योगिक क्षेत्र पर पूरा ध्यान दिया जाएगा। प्रदेश सरकार ने आगामी बजट के लिए यह लक्ष्य रखा है कि बजट अधिक से अधिक रोजगार परक और उद्योगों के अनुकूल हो ताकि प्रदेश की अर्थव्यवस्था को मजबूती मिले व 2047 तक विकसित भारत की यात्रा में हरियाणा का योगदान अग्रणी हो।

मुख्यमंत्री बुधवार को गुरुग्राम में बजट पूर्व परामर्श बैठक में उद्यमियों से सीधा संवाद कर रहे थे। श्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि बजट पूर्व परामर्श बैठक का लक्ष्य संबंधित हितधारकों के बहुमूल्य सुझाव लेकर प्रदेश में अधिक से अधिक उद्योगों के अनुकूल माहौल बनाना है। बीते वर्ष भी उद्योगों के साथ इस तरह बजट पूर्व परामर्श बैठक की गई थी, जिसमें बेहतरीन सुझाव आए थे, जिससे नीतियों को अधिक मजबूती मिली। बैठक में सुझाव प्राप्त हुए थे, जिसमें से 71 सुझावों को बजट में शामिल किया गया। उद्योग एवं श्रम विभाग के लिए वर्ष 2025-26 बजट में लगभग 1 हजार 951 करोड़ 43 लाख रुपये का प्रावधान किया गया, इसमें से 873 करोड़ 51 लाख रुपये की राशि खर्च की जा चुकी है। उन्होंने कहा कि बजट से जुड़े अच्छे सुझाव आमंत्रित हैं, कोई भी साथी एआई चैटबोट के माध्यम से अपने सुझाव दे सकता है।

मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि हरियाणा सरकार बजट में की गई घोषणाओं को लगातार धरातल पर उतारने का कार्य कर रही है। पिछले बजट में उद्योग एवं श्रम विभाग के बजट को 129.37 प्रतिशत तक बढ़ाया गया था ताकि इसे और अधिक सशक्त बनाया जाए। हरियाणा सरकार ने श्रमिकों के लिए डॉरमेट्री और सिंगल रूम के निर्माण हेतु आईएमटी बावल में 5 एकड़, आईएमटी फरीदाबाद में 2.76 एकड़ तथा आईएमटी सोहना में 5.47 एकड़ भूमि अधिकृत की है। आईएमटी खरखौदा के विस्तार के लिए 3 करोड़ रुपये प्रति एकड़ की दर से लगभग 5800 एकड़ भूमि की पहचान की जा चुकी है। इसे शीघ्र ही औद्योगिक नीति-2022 के अंतर्गत अधिकृत किया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आज इस बजट पूर्व परामर्श बैठक में अनेक सुझाव आए। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि हरियाणा के औद्योगिक विकास के लिए बजट प्रावधानों में विशेष फोकस होगा। जितने ठोस और लागू करने योग्य सुझाव दिए गए हैं, उतना ही प्रभावी बजट प्रस्तुत करेंगें। उन्होंने कहा कि हर सुझाव हमारे लिए मार्गदर्शक है और मैं व्यक्तिगत रूप से यह सुनिश्चित करूंगा कि उन पर गंभीरता से विचार किया जाए। मुख्यमंत्री ने कहा कि सोनीपत जिला के खरखौदा में 10 हजार एकड़ क्षेत्र में सैटेलाइट शहर बसाने की योजना है।

इसके साथ-साथ राई में हॉल सेल मार्केट बनाई जाएगी। इसको लेकर व्यापारियों ने संपर्क करना भी शुरू कर दिया है। उन्होंने कहा कि सरकार ने अपने संकल्प पत्र में ईवी पार्क बनाने का लक्ष्य भी रखा है। इसके साथ ही 70 हजार करोड़ रुपये की लागत से आरआरटीएस की डीपीआर बन चुकी है, जल्द ही उसका टेंडर होगा। यह सराय काले खां से करनाल व सराय काले खां से अलवर तक जाएगा, इससे प्रदेशवासियों को लाभ मिलेगा। वहीं मानेसर में कन्वेंशन सेंटर बनाया जाएगा। उन्होंने कहा कि लघु सचिवालय परिसर बावल में 26 लाख रुपये की राशि से लेबर कोर्ट बनाई जाएगी, इसके लिए बजट लोक निर्माण विभाग(भवन एवं सड़कें) को दिया जा चुका है।

हरियाणा के उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री राव नरबीर सिंह ने कहा कि हरियाणा सरकार विकसित भारत-2047 के विजन पर फोकस करते हुए कार्य कर रही है। औद्योगिक विकास के साथ ही विकसित राष्ट्र के रूप में भारत को नई पहचान दिलाने के लिए सरकार अपना दायित्व प्रभावी रूप से निभा रही है। उन्होंने कहा कि भविष्य उन्मुख हरियाणा बनाने में उद्योग जगत से जुड़े प्रतिनिधियों की अहम भागीदारी होती है, ऐसे में हरियाणा सरकार द्वारा आगामी बजट को हर हित की सोच के साथ सुगम व फलदायी बनाने के लिए इस प्रकार के प्री बजट सेशन में सुझाव लेते हुए कदम उठाए जाएंगे।

उन्होंने मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी की कार्यशैली की सराहना की। उन्होंने कहा कि यह हरियाणा सरकार की सार्थक पहल है कि बजट पूर्व परामर्श लेकर हर क्षेत्र के लोगों का ध्यान रखते हुए बजट में प्रावधान रखे जा रहे हैं। उन्होंने उपस्थित प्रतिनिधियों को पर्यावरण संरक्षण में भी अपनी सक्रिय भागीदारी निभाने के लिए प्रेरित किया।

11 सालों में दिल्ली को बर्बाद करने वाले सदन में मुंह ढंक कर आये: रविन्द्र इन्द्राज

विपक्ष के 11 सालों पर सरकार के 11 महीने भारी: इन्द्राज

संजना भारती संवाददाता

नई दिल्ली। 11 सालों में दिल्ली को बर्बाद करने वाले सदन में मुंह ढंक कर आये। यह बात समाज कल्याण मंत्री रविन्द्र इन्द्राज सिंह ने विधानसभा परिसर में मीडिया से बात करते हुए विपक्ष पर तंज कसते हुए कही। उन्होंने कहा कि अपनी सरकार में दिल्ली को बर्बाद करने वालों को मुंह छिपाकर ही आना चाहिए। श्री रविन्द्र इन्द्राज ने कहा कि विपक्ष का इंडस्ट्रियल मास्क अगले ही दिन गायब हो गया, यह विपक्ष की नीयत और गंभीरता को दर्शाता है।

श्री इन्द्राज ने कहा कि सरकार शुरू से ही चाहती है कि सदन में गंभीर और सार्थक चर्चा हो, विशेषकर प्रदूषण और एक्यूआई जैसे अहम विषयों पर। लेकिन विपक्ष सदन का समय और जनता का पैसा बर्बाद कर रहा है।

समाज कल्याण मंत्री ने कहा कि माननीय विधानसभा अध्यक्ष श्री विजेंदर गुप्ता जी ने इस विषय पर विशेष सत्र भी रखा और सरकार ने बार-बार विपक्ष से अपील भी की कि वह सदन में बैठकर चर्चा करे, लेकिन विपक्ष रोजाना प्रदर्शन कर सदन की कार्यवाही बाधित कर रहा है। उन्होंने कहा कि एलजी के अभिभाषण के दौरान भी विपक्ष ने गैर-जिम्मेदाराना व्यवहार किया।

श्री रविन्द्र इन्द्राज ने कहा कि विपक्ष के 11 सालों पर दिल्ली सरकार के 11 महीनों का काम भारी पड़ रहा है, तो विपक्ष को यह खटक रहा है। विपक्ष से जो कचरा और समस्याएँ दिल्ली को विरासत में मिली हैं, उनसे निपटने के लिए सरकार पूरी प्रतिबद्धता से काम कर रही है।

समाज कल्याण मंत्री ने कहा कि दिल्ली विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष (एलओपी) द्वारा गुरुओं के प्रति जिस प्रकार की भाषा का प्रयोग किया गया, वह अत्यंत निंदनीय और शर्मसार करने वाला है। जिन गुरुओं और परिवारों ने इस देश के लिए अपने प्राणों की आहुति दी, उनके प्रति ऐसी भावना रखना और ऐसी शब्दावली का प्रयोग करना अपने आप में दयनीय है। उन्होंने कहा कि आप नेताओं को पूरे देश से माफी मांगनी चाहिए।

समाज कल्याण मंत्री ने कहा कि दिल्ली की जनता सब देख रही है, समझ रही है और सच उनके सामने आ रहा है। भारतीय जनता पार्टी सदन में चर्चा के लिए पूरी तरह तैयार है और दिल्ली के हित में काम करती रहेगी।

पंजाब ने देश को दिखाया कि नशे के खिलाफ जंग कैसे लड़ी जाती है-केजरीवाल

युद्ध नशे के विरुद्ध के पहले चरण से भी अधिक सफल होगा दूसरा चरण-मुख्यमंत्री मान

एसबी संवाददाता

फगवाड़ा। पंजाब में नशे के खिलाफ जंग को और तेज करते हुए आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल और पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने आज यहां लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी के कैंपस में प्रदेश में नशे की बला को जड़ से उखाड़ने के लिए 'युद्ध नशे के विरुद्ध' अभियान के दूसरे चरण की शुरूआत की।

'आप' प्रमुख ने पहले चरण के ठोस नतीजों का हवाला देते हुए कहा कि तस्करों के खिलाफ बड़े स्तर पर कार्रवाई की गई, सजा दर बढ़ने के साथ-साथ नशों के खिलाफ युद्ध में लोगों की भागीदारी बढ़ी। उन्होंने कहा कि दूसरा चरण प्रदेश में ड्रग नेटवर्क को खत्म करने के लिए पंजाब को एकजुट करेगा।

सभा को संबोधित करते हुए, 'आप' के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने कहा, युद्ध नशे के विरुद्ध के पहले चरण की शानदार सफलता के बाद, दूसरा चरण आज शुरू हो रहा है। पहला चरण 1 मार्च 2025 को लगभग 10 महीने पहले शुरू किया गया था, और जिस ईमानदारी, कड़ी मेहनत और दृढ़ता के साथ इसे लागू किया गया, वह पहले कभी नहीं देखी गई, न केवल पंजाब में बल्कि देश भर के किसी भी राज्य में, नशों के खिलाफ लड़ाई इतने व्यापक ढंग से नहीं लड़ी गई। ऐसा नहीं है कि नशे केवल पंजाब में ही बिकते हैं। हरियाणा, गुजरात, दिल्ली और कई अन्य राज्यों सहित बहुत से राज्य हैं, जहां नशे खुलेआम और बड़ी मात्रा में बिकते हैं, लेकिन वहां की सरकारों को कोई परवाह नहीं है।

'आप' सरकार बनने से पहले के हालात को याद करते हुए 'आप' प्रमुख ने आगे कहा, पंजाब में, हमसे पहले, जब शिरोमणि अकाली दल की सरकार सत्ता में थी, उनके राज के दौरान नशे हर गली और हर घर में सप्लाई होते थे। यह वह समय था जब पंजाब नशों में जकड़ा हुआ था जिसके कारण 'उड़ता पंजाब' फिल्म बनी थी। पंजाब ने नशे को घरों में घुसते देखा, और उनके कई बड़े नेता सीधे तौर पर नशे बेचने में शामिल थे। उसके बाद, कैप्टन अमरिंदर ने गुटका साहिब पर शपथ ली और कहा कि वे 30 या 60 दिनों में नशों को खत्म कर देंगे। उनकी सरकार पांच साल चली और कुछ नहीं किया गया। वे झूठी शपथें थी। उसके बाद, हमारी सरकार आई।

अधिक विस्तार से बताते हुए, अरविंद केजरीवाल ने कहा, हमने कुछ समय लिया क्योंकि सही तैयारी की जरूरत थी, लेकिन पिछले साल 1 मार्च के बाद, जिस दृढ़ता और हिम्मत के साथ हमने नशों के खिलाफ कार्रवाई शुरू की, वह बेमिसाल थी। बहुत से लोगों ने हमें चेतावनी दी कि नशा तस्कर बहुत खतरनाक हैं, वे बड़े गैंगस्टर, अपराधी और गुंडे हैं, और वे हमारे परिवारों को नुकसान पहुंचा सकते हैं। हमने कहा नहीं, हम लोगों से वादा करके आए हैं कि हम पंजाब को नशा मुक्त बनाएंगे और अपने बच्चों के लिए एक अच्छा भविष्य सुरक्षित करेंगे। लागू करने के पैमाने का विवरण देते हुए, उन्होंने आगे कहा, पिछले 10 महीनों में नशा तस्करों के खिलाफ 28,000 मामले दर्ज किए गए हैं। इतने बड़े स्तर पर, आजादी के बाद के 75 सालों में, देश के किसी भी राज्य ने कभी इतने सारे मामले दर्ज नहीं किए। ये फर्जी मामले नहीं हैं। जब ये मामले अदालतों में पहुंचे और एफआईआर की जांच हुई, तो 88 प्रतिशत मामलों में दोषियों को जेल भेज दिया गया। अगर ये फर्जी मामले होते, तो खत्म हो जाते, लेकिन पुलिस द्वारा पकड़े गए लोग जेल जा रहे हैं और अदालतें सजा दे रही हैं। हर 100 मामलों में से 88 मामलों में जेल का हुक्म दिया गया है, और अब तक अदालतों में पहुंचे 28,000 मामलों में से 88 प्रतिशत को कैद की सजा हुई है।

बड़े ड्रग नेटवर्क के खिलाफ गिरफ्तारियां और कार्रवाई पर जोर देते हुए 'आप' सुप्रीमो ने साझा किया कि लगभग 42,000 तस्करों को गिरफ्तार किया गया है। पहले कभी किसी राज्य ने इतने बड़े स्तर पर तस्करों को नहीं पकड़ा। उनमें से 350 बड़े तस्कर हैं।

हिन्दुस्तान उर्वरक एवं रसायन लिमिटेड बरौनी को मिला उच्च रेल गुणक पुरस्कार

एसबी ब्यूरो

बीहट(बेगूसराय)। बुधवार को सोनपुर मंडल के मंडल रेल प्रबंधक अमित शरण ने हिन्दुस्तान उर्वरक एवं रसायन लिमिटेड की बरौनी इकाई का दौरा किया। इस अवसर पर उन्होंने संयंत्र के संचालन, सुरक्षा मानकों तथा लॉजिस्टिक सुविधाओं का अवलोकन किया।

वही शरण ने रेल कनेक्टिविटी, माल परिवहन की दक्षता और भविष्य में सहयोग के अवसरों पर विस्तृत चर्चा की। उन्होंने एच.यू.आर.एल.बरौनी प्रबंधन को रेल परिवहन के माध्यम से तैयार उत्पादों की समयबद्ध आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक सहयोग का आश्वासन दिया। इसके अतिरिक्त हिन्दुस्तान उर्वरक एवं रसायन लिमिटेड बरौनी इकाई को आज सोनपुर मंडल के मंडल रेल प्रबंधक अमित शरण द्वारा उच्च रेल गुणक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह सम्मान एच.यू.आर.एल. बरौनी की उत्कृष्ट लॉजिस्टिक प्रबंधन और समयबद्ध आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए प्रदान किया गया है।

इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक शरण ने कहा कि एच.यू.आर.एल.बरौनी ने रेल परिवहन के माध्यम से माल ढुलाई में सर्वोत्तम प्रदर्शन कर क्षेत्र में औद्योगिक विकास को गति दी है। जिससे की वर्तमान वित्तीय वर्ष 2025-26 में रेलवे के सोनपुर मंडल को 100 करोड़ से अधिक की राजस्व की प्राप्ति हुई है। उन्होंने भविष्य में भी रेलवे और एच.यू.आर.एल. बरौनी के बीच बेहतर सहयोग की उम्मीद जताई।

एच.यू.आर.एल. बरौनी इकाई के प्रमुख नितिन सक्सेना ने इस सम्मान के लिए मंडल रेल प्रबंधक और रेलवे प्रशासन का आभार व्यक्त किया तथा रेल परिवहन के माध्यम से पर्यावरण-अनुकूल और लागत-प्रभावी आपूर्ति श्रृंखला को और मजबूत करने का संकल्प लिया। एच.यू.आर.एल. बरौनी टीम ने मंडल रेल प्रबंधक को संयंत्र की उत्पादन क्षमता, तकनीकी विशेषताओं के बारे में जानकारी दी। इस कार्यक्रम के दौरान वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक रौशन कुमार, एच.यू.आर.एल. बरौनी के प्रेषण एवं योजना विभाग के शुषासु कुमार मौजूद रहे। यह जानकारी इकाई के कारखाना प्रबंधक मनीष कुमार द्वारा साझा की गई।

सम्पादकीय

फिर निशाने पर जेएनयू

देश के प्रतिष्ठित उच्च शिक्षण संस्थान जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय पर एक बार फिर दक्षिणपंथी विचारधारा के लोग हमलावर हैं। इस संस्थान को टुकड़े-टुकड़े गैंग का अड्डा बताया जा रहा है। मोदी सरकार के आने के बाद से जेएनयू भाजपा और संघ समर्थकों के निशाने पर रहता आया है। खासकर संस्थान के जो छात्र वामपंथी विचारों के हैं, उन्हें किसी न किसी तरीके से देशद्रोही ठहराने की कोशिशें की जाती हैं। वही कोशिशें सोमवार से फिर शुरू हो चुकी हैं। दरअसल सोमवार 5 जनवरी को सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली दंगों में आरोपी बनाए गए उमर खालिद और शरजील इमाम की जमानत याचिका खारिज कर दी, जबकि अन्य पांच सह आरोपियों को जमानत दे दी गई है। जबकि छह साल पहले 2020 में जेएनयू के इतिहास की सबसे बड़ी हिंसक घटना 5 जनवरी को हुई थी। जिसमें विवि परिसर में नकाबपोश लोगों की भीड़ ने हॉस्टलों में घुसकर छात्रों पर लाठी, पत्थर और लोहे की रॉड से हमला किया था। इस हमले में तत्कालीन छात्रसंघ अध्यक्ष आइशी घोष सहित कम से कम 28 लोग घायल हुए थे, इसमें दिल्ली पुलिस की भूमिका पर भी सवाल उठे थे कि आखिर उसके रहते इतनी बड़ी घटना कैसे हुई। आज तक उस घटना के असल दोषियों को सजा नहीं हुई है। इसी पर हर साल जेएनयू में छात्र इक्ा होकर अपने गुस्से का इजहार करते हैं। सोमवार रात भी छात्र एकत्र हुए और जेएनयू परिसर में नरेन्द्र मोदी और अमित शाह के खिलाफ नारेबाजी हुई। इसमें उनके लिए आपत्तिजनक शब्दों के इस्तेमाल की भी खबरें हैं। यह सही है कि किसी भी तरह के विरोध प्रदर्शन में कट्टर से कट्टर विरोधी के लिए भी मयार्दा के दायरे में रहकर शब्दों का इस्तेमाल होना चाहिए। लेकिन फिर यह संतुलन दोनों पक्षों से अपेक्षित होता है। अभी केन्द्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने कहा है कि कुछ लोगों ने जेएनयू को 'टुकड़े-टुकड़े' गिरोह का अड्डा बना दिया है। राहुल गांधी, टीएमसी, कम्युनिस्ट जैसे लोग इस गिरोह का हिस्सा हैं... ये लोग सुप्रीम कोर्ट में विश्वास नहीं रखते। उमर खालिद और शरजील इमाम के समर्थन में और प्रधानमंत्री मोदी व अमित शाह के खिलाफ नारे लगाए जा रहे हैं। ऐसे लोगों पर देशद्रोह का मुकदमा चलना चाहिए। पाकिस्तान जैसी मानसिकता रखने वालों को भारत की जनता ऐसे लोगों को कभी बर्दाश्त नहीं करेगी। सरकार के विरोध में जब भी कोई आवाज शैक्षणिक परिसरों से उठती है, उसे दबाने या फिर गलत साबित करने की कोशिशें शुरू हो जाती हैं। जेएनयू में तो अब होली-दीवाली जैसे मौकों पर भी खान-पान के नाम पर ही झड़पें होने लगी हैं। एक बार तो विजयादशमी पर एबीवीपी ने रावण दहन में अफजल गुरु, उमर खालिद और शरजील इमाम के चित्र लगाकर पुतला जलाए, जिस पर वामपंथी समूहों ने इसे इस्लामोफोबिया और नफरत फैलाने का आरोप लगाया। ऐसी तमाम झड़पों और हिंसक घटनाओं के पीछे मकसद यही है कि किसी भी तरह विश्वविद्यालय परिसर को हिंदुत्ववादी गतिविधियों का अड्डा बनाया जाए। सोमवार के विरोध के बाद ही एबीवीपी ने कहा है कि वह इस विरोध प्रदर्शन की शिकायत पुलिस में करेगा। वहीं जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय छात्र संघ की अध्यक्ष अदिति मिश्रा ने कहा है कि छात्र 5 जनवरी, 2020 को परिसर में हुई हिंसा की निंदा करने के लिए हर साल विरोध प्रदर्शन करते हैं। उन्होंने बताया, विरोध प्रदर्शन में लगाए गए सभी नारे वैचारिक थे और किसी पर व्यक्तिगत रूप से हमला नहीं है। वे किसी को लक्षित करते हुए नहीं थे। बता दें कि जेएनयू में वामपंथी समर्थित छात्र संगठन का कब्जा है और यह भी संघ और भाजपा के लिए एक बड़ी कसक है कि उसकी तमाम कोशिशों के बावजूद जेएनयू में वाममोर्चा पस्त नहीं हो रहा है। जेएनयू में सोमवार रात लगे नारों पर कांग्रेस नेता संदीप दीक्षित ने कहा है कि आप लोगों की आलोचना कर सकते हैं, लेकिन अपनी भावनाओं को शब्दों में व्यक्त करने का एक तरीका होता है। वहीं राजद सांसद मनोज झा ने पूछा है कि क्या यह चुनिंदा आक्रोश है? हां, लोग स्वाभाविक रूप से गुस्से में हैं। हममें से कई लोगों को भी लगता था कि शरजील और उमर को जमानत मिल जानी चाहिए थी। पांच साल से अधिक समय बीत चुका है और मुकदमे के नाम पर कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई है। यह अपने आप में चिंता का विषय है-संवैधानिक सुरक्षा लागू होने से पहले किसी को कितने समय तक जेल में रहना चाहिए? यह एक तरह से आपराधिक न्याय प्रणाली पर भी चोट है। बता दें कि शीर्ष अदालत के सोमवार के फैसले पर मिश्रित प्रतिक्रियाएं आई हैं, हालांकि कानून के जानकार अधिकतर लोग इस फैसले पर सवाल उठा रहे हैं कि पांच साल से ज्यादा वक्त तक बिना मुकदमा जेल में रखना क्या मूल अधिकारों का हनन नहीं है। क्योंकि अदालत ने ही जेल को अपवाद और बेल को नियम कहा है। अदालत ने स्पष्ट किया कि उमर खालिद और शारजील इमाम की जमानत याचिकाएं अभियोजन द्वारा पेश संरक्षित गवाहों की परीक्षा पूरी होने या इस आदेश की तारीख से एक वर्ष की अवधि समाप्त होने पर (जो पहले हो) विचार की जा सकती हैं।

जयंती

मोहन राकेश

जन्मः 8 जनवरी, 1925; मृत्युः 3 जनवरी, 1972, 'नई कहानी आन्दोलन' के साहित्यकार थे। हिन्दी नाटक के क्षितिज पर मोहन राकेश का उदय उस समय हुआ, जब स्वाधीनता के बाद पचास के दशक में सांस्कृतिक पुनर्जागरण का ज्वार देश में जीवन के हर क्षेत्र को स्पन्दित कर रहा था। उनके नाटकों ने न सिर्फ.नाटक का आस्वाद, तेवर और स्तर ही बदल दिया, बल्कि हिन्दी रंगमंच की दिशा को भी प्रभावित किया। आधुनिक हिन्दी साहित्य काल में मोहन राकेश ने अपने लेखन से दूर होते हिन्दी साहित्य को रंगमंच के करीब ला दिया और स्वयं को भारतेन्दु हरिश्चंद्र और जयशंकर प्रसाद के समकक्ष खड़ा कर दिया।

पुण्यतिथि

मधु लिमये

जन्म-1 मई, 1922; मृत्यु-8 जनवरी, 1995, भारतीय राजनीतिज्ञ और समाजवादी आंदोलन के नेताओं में से एक थे। भारत की समाजवादी राजनीति के प्रतिनिधि नेता मधु लिमये ने चार दशक तक देश की राजनीति को कई तरीकों से प्रभावित किया। वह प्रखर वक्ता और सिद्धांतकार थे। तात्कालिक राजनीतिक स्वार्थ के समय ही सुनाई देने वाली 'अंतरात्मा की आवाज' के दौर में मधु लिमये लोकतंत्र, आडंबरहीनता और साफ सार्वजनिक जीवन के पहरेदार बन गए थे। मधु लिमये ने दुनिया को बताया कि संसद में बहस कैसे की जाती है। उन्होंने सांसद होने की पेंशन कभी नहीं ली और न ही पूर्व सांसद होने की सुविधाएं।

कल मिलेंगे

गोलू-एक पड़ोसी से-मैं आपकी बेटी से शादी करना चाहता हूं।
पड़ोसी-कितना कमा लेते हो?
गोलू-20 हजार रुपये प्रति माह।
पड़ोसी-मैं अपनी बेटी को 15 हजार रुपये प्रति माह पॉकेट मनी देता हूं।
गोलू-मैं भी तो उसी को जोड़कर ही तो बता रहा हूं...

संजना भारती दैनिक

भगवान शंकर जी के 11वें रुद्रावतार हनुमान जी (मेंहदीपुर, श्री बाला जी) के संरक्षण में संचालित किया जाता है। समाचार पत्र का यह अंक भी उन्हीं के चरणों में श्रद्धापूर्वक समर्पित है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक-**संजय कुमार** द्वारा आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-41, सेक्टर-8, नोएडा, उत्तर प्रदेश से मुद्रित तथा ए-281सी, गली नं. 3, ए-ब्लॉक, अम्बिका विहार, शिव विहार, दिल्ली-110094 से प्रकाशित। इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत संपादक उत्तरदायी।

RNI No. : DELHIN/2016/70240

Phone No.: 9871221635

E-mail ID: sanjanabharati16@gmail.com

(किसी भी वाद-विवाद में न्याय क्षेत्र दिल्ली ही होगा।)

मोदी-शाह फॉर्मूले के हिंदी क्षेत्र के बाहर सबसे कठिन परीक्षा का समय

भाजपा ने आक्रामक तरीके से ध्रुवीकरण किया है, बड़े पैमाने पर लोगों को जुटाया है और एक दशक से ज्यादा समय से संगठनात्मक पूंजी लगाई है। लेकिन बंगाल की राजनीति सिफ वैचारिक जोर से तय नहीं होती। यह कल्याणकारी योजनाओं, अत्यधिक स्थानीय संरक्षण नेटवर्क और बंगाली उप-राष्ट्रवाद की गहरी जड़ें वाली भावना से आकार लेती है। बंगाल की आबादी में मुसलमानों की हिस्सेदारी 27-28 प्रतिशत है

-आर. सूर्य

एक दशक से ज्यादा समय से, भारतीय चुनाव एक धोखे से भरे आसान फॉर्मूले के इर्द-गिर्द घूम रहे हैं- नरेंद्र मोदी बड़े पैमाने पर शो करते हैं, अमित शाह चुनावी गणित को सटीक बनाते हैं। एक कहानी पर हावी रहता है, दूसरा मशीन को कंट्रोल करता है। फिर भी 2026 उस सबसे असुविधाजनक सच्चाई - राष्ट्रीय प्रभुत्व अपने आप क्षेत्रीय शक्ति में नहीं बदलता - को उजागर करने का खतरा दरपेश करता है जिससे भाजपा सावधानी से बचने की कोशिश करती रही है।

पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, केरल, असम और पुडुचेरी में होने वाले विधानसभा चुनाव केंद्र में नरेंद्र मोदी सरकार को अस्थिर नहीं करेंगे, या पार्टी पर अमित शाह की पकड़ को ढीला नहीं करेंगे। मोदी राष्ट्रीय स्तर पर चुनावी रूप से अजेय बने हुए हैं। संगठन पर शाह का नियंत्रण लगभग पूरा है। लेकिन ये चुनाव उस मिथक को तोड़ सकते हैं जिसे भाजपा ने एक दशक तक पाला-पोसा हैकि ब्रांड मोदी हर जगह, संस्कृतियों, भाषाओं, जाति संरचनाओं और राजनीतिक परंपराओं में चुनावी रूप से अजेय हैं। यहीं, नई दिल्ली में नहीं, मोदी-शाह प्रोजेक्ट को सबसे कठिन चुनौती का सामना करना पड़ता है।

भाजपा के पसंदीदा पैमानों के अनुसार, पार्टी अजेय दिखती है। 2024 के लोकसभा चुनाव में उसका वोट शेयर लगभग 36.5 प्रतिशत था, जिससे वह भारत में सबसे बड़ी राजनीतिक ताकत बन गई। अर्थव्यवस्था 6.7-7 प्रतिशत की दर से बढ़ रही है, महंगाई कम हुई है, और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन 18 राज्यों पर सीधे या अप्रत्यक्ष रूप से शासन करता है। विपक्ष खंडित, वैचारिक रूप से असंगत और रणनीतिक रूप से विभाजित है। लेकिन चुनाव राष्ट्रीय औसत पर नहीं लड़े जाते। वे विशिष्ट सामाजिक गठबंधनों, ऐतिहासिक यादों और स्थानीय शक्ति संरचनाओं के भीतर जीते या हारे जाते हैं।

2026 में पांचराज्यों जहां चुनाव होने हैं उनमें से, भाजपा केवल एक-असम - पर सीधे शासन करती है। वहां भी, मोदी आकर्षण का केंद्र नहीं हैं। हिमंतविश्व शर्मा हैं। बाकी सभी जगहों पर, मोदी-शाह ब्रांड को गहरी सांस्कृतिक, जातिगत और भाषाई बाधाओं का सामना करना पड़ा है, जिन्हें केंद्र में बारह साल की लगातार सत्ता भी खत्म करने में विफल रही है। भाजपा के लिए पश्चिम बंगाल सबसे ज्यादा खुलासा करने वाला केस स्टडी है। 2011 और 2021 के बीच, पार्टी का वोट शेयर 10 प्रतिशत से बढ़कर लगभग 38 प्रतिशत हो गया - जो भाजपा के इतिहास में सबसे तेज चुनावी विस्तार में से एक है। फिर भी, 2021 में, ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस ने 48 प्रतिशत वोट और 294 में से 213 विधानसभा सीटों के साथ इस चुनौती को कुचल दिया।

भाजपा ने आक्रामक तरीके से ध्रुवीकरण किया है, बड़े पैमाने पर लोगों को जुटाया है और एक दशक से ज्यादा समय से संगठनात्मक पूंजी लगाई है। लेकिन बंगाल की राजनीति सिफ वैचारिक जोर से तय नहीं होती। यह कल्याणकारी योजनाओं, अत्यधिक स्थानीय संरक्षण नेटवर्क और बंगाली उप-राष्ट्रवाद की गहरी जड़ें वाली भावना से आकार लेती है। बंगाल की आबादी में मुसलमानों की हिस्सेदारी 27-28 प्रतिशत है। तृणमूल कांग्रेस को उनमें से लगभग दो-तिहाई से तीन-चौथाई लोगों का समर्थन हासिल है। इसमें महिला मतदाताओं को भी जोड़ दें - जो मतदाताओं का लगभग 49 प्रतिशत हैं - जिन्हें लक्ष्मी भंडार जैसी योजनाओं के जरिए टीएमसी के कल्याणकारी शासन तंत्र में राजनीतिक रूप से एकीकृत किया गया है, और भाजपा की सीमा साफ हो जाती है। ब्रांड मोदी रैलियों में जोश भर सकता है, लेकिन बंगाल में चुनाव पोडियम से नहीं जीते जाते। वे नगर निगम कार्यालयों, राशन की दुकानों और मोहल्ला समितियों में जीते जाते हैं-ऐसी जगहें जहां भाजपा अभी भी एक शासी विकल्प से ज्यादा एक जोरदार बाहरी पार्टी की तरह दिखती है। अगर बंगाल भाजपा की सीमाओं को उजागर करता है, तो तमिलनाडु उसकी धारणाओं को अपमानित करता है। एनडीए गठबंधन, लगातार केंद्रीय अभियानों, और राष्ट्रीय पहचान के बावजूद, तमिलनाडु में भाजपा का वोट शेयर 3 से 6 प्रतिशत के बीच अटका हुआ है। 2021 में भी, अन्नाद्रमुक गठबंधन के सहारे, एनडीए को 234 सदस्यीय विधानसभा में सिफ 23 सीटें मिलीं। यह मैसेजिंग की विफलता नहीं है। यह तालमेल की विफलता है।

उच्च जातियां तमिलनाडु की आबादी का मुश्किल से 3-4 प्रतिशत हैं। ओबीसी और एमबीसी मिलकर मतदाताओं का लगभग दो-तिहाई हिस्सा हैं। यहां द्रविड़ राजनीति वैचारिक दिखावा नहीं है; यह राजनीतिक सामान्य ज्ञान है, जो रोजमर्रा के शासन और सामाजिक पहचान में गहराई से जुड़ा हुआ है। आर्थिक रूप से, तमिलनाडु भाजपा की पसंदीदा पिच को और कमजोर करता है। यह राज्य भारत की जीडीपी में लगभग 9 प्रतिशत का योगदान देता है। यहां प्रति व्यक्ति आय 2.8 लाख रुपये सालाना से ज्यादा है, और इसने दशकों से एक द्रविड़ ढांचे के जरिए कल्याण किया है, जो मोदी के आने से बहुत पहले का है। यहां के मतदाता राष्ट्रीय बदलाव की तलाश में नहीं हैं। वे बंटवारे, सम्मान और स्वायत्तता पर बातचीत कर रहे हैं। केरल की आबादी बहुत की संरचना मुश्किल है। आबादी में मुसलमानों की संख्या लगभग 27 प्रतिशत है, और ईसाइयों की लगभग 18 प्रतिशत। लगभग 45 प्रतिशत मतदाता अल्पसंख्यक हैं जो भाजपा के राष्ट्रीय वैचारिक प्रोजेक्ट पर बहुत ज्यादा शक करते हैं। असम की राजनीति बहुत ज्यादा स्थानीय है-जो जातीयता, जमीन के अधिकार, प्रवासन की चिंताओं और पहचान के संघर्षों से तय होती है। मुसलमानों की संख्या, जो अनुमानित 34-35 प्रतिशत है, भाजपा की पहुंच से काफी हद तक बाहर है। पार्टी शर्मा के अति-स्थानीय नेतृत्व में असमिया हिंदुओं, ओबीसी और आदिवासी समूहों को एकजुट करके इसकी भरपाई करती है। यह मॉडल हर जगह लागू नहीं हो सकता। इसके लिए एक प्रभावशाली क्षेत्रीय नेता की जरूरत होती है - जिसकी भाजपा में, ज्यादातर गैर-हिंदी राज्यों में, साफ तौर पर कमी है। यह भाजपा की सबसे असहज संरचनात्मक समस्या है। इसके राष्ट्रीय गठबंधन - उच्च जातियां और ओबीसी का एक हिस्सा ने हिंदी भाषी राज्यों में शानदार ढंग से काम किया है। लेकिन जिन राज्यों में उच्च जातियां आबादी का 10 प्रतिशत से कम हैं और सामाजिक न्याय की राजनीति हिंदुत्व से पहले से मौजूद है, वहां यह फॉमूर्ला फेल हो जाता है। राजनीति में बारह साल बहुत लंबा समय होता है। अगर केंद्र में लगातार दस साल सत्ता में रहने के बाद भी भाजपा पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु या केरल में सेंध नहीं लगा पाती है, तो समस्या नेतृत्व, कोशिश या संसाधनों की नहीं है। यह ढांचागत दोष की समस्या है। भाजपा भारत पर राज करना जारी रख सकती है। लेकिन भारत पर राज करना और पूरे भारत का प्रतिनिधित्व करना एक ही बात नहीं है।

2025 का भारतः ईसाई अल्पसंख्यकों की दुर्दशा

इन घटनाओं की खबरें अंतरराष्ट्रीय मीडिया में भी प्रसारित और प्रकाशित हुईं। कुछ समाचारपत्रों ने उनके देशों में बदले की भावना से हिन्दुओं के साथ हिंसा होने की संभावना भी जताई। इन घटनाओं को लेकर भारत सरकार के रवैये का सबसे दिलचस्प पहलू यह है कि उसने पूरी तरह चुप्पी साध रखी है। यह कोई संयोग मात्र नहीं है कि हिंसा की ज्यादातर घटनाएं भाजपा-शासित राज्यों में हो रही है

-राम पुनियानी

अल्पसंख्यक मुस्लिम समुदाय के खिलाफ हिंसा हमारे देश में आम हो गई है। उसका स्वरूप और तीव्रता बदलती रहती है पर मुसलमानों को डराने-धमकाने का सिलसिला कभी थमता नहीं है। दूसरे सबसे बड़े अल्पसंख्यक समुदाय, ईसाईयों, को भी बख्शा नहीं जाता हालांकि उनके खिलाफ हिंसा की खबरें यदाकदा ही सामने आती हैं। इसकी मुख्य वजह यह है कि हिंसा इतने छोटे स्तर पर होती है कि उसका पता ही नहीं चलता। मगर क्रिसमस के आसपास वह साफ नजर आने लगती है।

हमें 1990 का दशक याद है जब ओडिशा और गुजरात में हिंसा हुई थी और लगभग उसी दौरान अटल बिहारी वाजपेयी ने टिप्पणी की थी कि धर्मपरिवर्तन के मुद्दे पर राष्ट्रीय बहस की आवश्यकता है। धर्मपरिवर्तन ईसाई समुदाय से जुड़े विभिन्न आयोजनों पर हमले करने का मुख्य बहाना रहा है। उनकी प्रार्थना सभाओं, चर्चों में होने वाली बैठकों और समारोहों के दौरान हिंसा की अधिक घटनाएं होती हैं। इस साल भी क्रिसमस से जुड़े कार्यक्रमों के दौरान हिंसा हुई।

हिंदुत्व के मैदानी कार्यकताओं के लिए फुटपाथ पर क्रिसमस से संबंधित सामान जैसे टोपियां, कपड़े आदि बेच रहे दुकानदारों पर हमले करना एक जश्न मनाने जैसा था। कई जगहों पर उन्होंने सांता क्लाज की प्रतिकृतियों को तोड़ा, चर्चों को नुकसान पहुंचाया और क्रिसमस से जुड़ी सामग्री बेच रही दुकानों पर हमला किया। स्तंभकार तवलीन सिंह ने इंडियन एक्सप्रेस में लिखा, 'हिन्दुत्व के अधिक दुस्साहसी सैनिक चर्चों में घुस गए और उन्होंने वहां हिंसा और वहशी हरकतें करते हुए प्रार्थनाओं में बाधा डाली। उन्होंने अपनी इन 'उपलब्धियों' के वीडियो सोशल मीडिया पर अपलोड किए। इनमें से एक में मैंने देखा कि जबलपुर में एक भाजपा नेत्री एक चर्च में प्रवेश करती है और आक्रामक भाषा में एक नेत्रहीन महिला को धमकाते हुए उस पर हिंदुओं का धर्मपरिवर्तन कर उन्हें ईसाई बनाने का प्रयास करने का आरोप लगाती है...क्रिसमस के उत्सवों में बाधा डालने के लगभग 100 प्रयास किए गए और लगभग सभी उन राज्यों में हुए जहां भाजपा का शासन है। किसी को भी दंडित नहीं किया गया और किसी भी मुख्यमंत्री ने खुलकर हिंसा की आलोचना नहीं की'।

इन घटनाओं की खबरें अंतरराष्ट्रीय मीडिया में भी प्रसारित और प्रकाशित हुईं। कुछ समाचारपत्रों ने उनके देशों में बदले की भावना से हिन्दुओं के साथ हिंसा होने की संभावना भी जताई। इन घटनाओं को लेकर भारत सरकार के रवैये का सबसे दिलचस्प पहलू यह है कि उसने पूरी तरह चुप्पी साध रखी है। यह कोई संयोग मात्र नहीं है कि हिंसा की ज्यादातर घटनाएं भाजपा-शासित राज्यों में हो रही है। हम खुशकिस्मत हैं कि हमारे प्रधानमंत्री नॉन बायोलॉजिकल हैं और इसलिए इस सबके बीच भी वे चर्च में जाकर प्रार्थना कर लेते हैं! यह बहुत ही दिलचस्प था कि जब चर्च में हिन्दुत्व के सर्वोच्च नेता ईसाई धर्म के प्रति सम्मान दिखा रहे थे तब उनके अनुयायी चर्चों और सड़कों पर ईसाई-विरोधी गुंडागर्दी कर रहे थे।

सिटीजन्स फॉर जस्टिस एंड पीस (24 दिसंबर 2025) ने अपनी रपट में ईसाई-विरोधी हिंसा में हुई जबरदस्त बढ़ोतरी का सारगर्भित विवरण किया है। 'वर्ष 2014 से 2024 के बीच ईसाई-विरोधी हिंसा की दस्तावेजीकृत घटनाओं की वार्षिक संख्या 139 से बढ़कर 834 हो गई, जो 500 प्रतिशत से भी अधिक की वृद्धि दशार्ता है। केवल 2025 में जनवरी से लेकर नवंबर तक ऐसी 700 से अधिक घटनाओं की सूचना प्राप्त हो चुकी है जो घरों, चर्चों, स्कूलों, अस्पतालों एवं अन्य संस्थाओं में घटित हुईं। इनसे दलित व आदिवासी ईसाई व महिलाएं सर्वाधिक प्रभावित हुईं'। यूएस कमीशन ऑन इंटरनेशनल रिलीजियस फ्रीडम ने अपनी 2025 की रपट में धार्मिक स्वतंत्रता के बुरे हालातों का हवाला देते हुए एक बार फिर भारत को 'विशिष्ट चिंता वाला देश' घोषित किए जाने की अनुशंसा की है। ह्यूमन राइट्स वॉच एवं अन्य संस्थाओं ने भी अल्पसंख्यकों को प्रभावित करने वाली घटनाओं का दस्तावेजी विवरण दिया है।

क्रिसमस के ठीक पूर्व हिंसा होना कोई नई बात नहीं है और एक बिशप ने रायपुर में चर्चों को हिंसा के प्रति आगाह किया था। रायपुर में कैथोलिक अर्चबिशप विक्टर हैनरी ठाकुर बहुत चिंतित थे। उन्होंने स्थानीय चर्चों, स्कूलों और अन्य संस्थानों को पत्र लिखकर उनसे सावधान रहने का अनुरोध किया था। 'कल (क्रिसमस के दिन) के लिए छत्तीसगढ़ बंद रखने के आह्वान के मद्देनजर मेरा मानना है और मेरा सुझाव है कि हमारे सभी चर्चों, कान्वेंटों और अन्य संस्थानों को लिखित अनुरोध कर स्थानीय पुलिस से सुरक्षा की मांग करनी चाहिए। कृपया मेरे सुझाव की ओर ध्यान दें क्योंकि ऐसा लगता है कि ओडिशा के कं धमाल की तरह यहां भी क्रिसमस के ठीक पहले कुछ करने की योजनाएं बनाई जा रही हैं'। 2007 और 2008 में ओडिशा में क्रिसमस के आसपास भारी हिंसा हुई थी। इस प्रायोजित हिंसा ने 2008 में भीषण रूप ग्रहण कर लिया था। लगभग 7,000 ईसाईयों को घर छोड़कर भागना पड़ा था और 400 चर्चों में तोड़फोड़ की गई थी। इस पृष्ठभूमि में यह अपेक्षा थी कि चर्चों के विभिन्न स्तरों के कर्ताधर्ता ईसाईयों पर हुए हमलों को लेकर चिंता जाहिर करेंगे। लेकिन इस गंभीर मुद्दे पर उनकी चुप्पी से यह जाहिर होता है कि या तो उन्हें अपने समुदाय के लोगों की फिक्र नहीं है या इसके पीछे उनका कोई गुप्त निहित स्वार्थ है।

हमने देखा है कि एक के बाद एक राज्य धर्मांतरण विरोधी कानून बनाते जा रहे हैं जिन्हें 'धर्म स्वतांत्र्य अधिनियम' का नाम दिया जाता है। इनसे ईसाई समुदाय की धार्मिक गतिविधियों में तरह-तरह की बाधाएं और कठिनाईयां खड़ी हो गई हैं। पॉस्टरों और पादरियों को धर्मपरिवर्तन कराने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया जाता है और वे सालों तक निरर्थक कानूनी झंझटों में उलझे रहते हैं। ईसाईयों के विरूद्ध धर्मपरिवर्तन को लेकर जो प्रोपेगेंडा चलाया जाता है उस पर विचार किया जाना आवश्यक है। भारत में ईसाई धर्म बहुत प्राचीन समय से है और इसका आगमन मालाबार तट पर सन् 52 में सेंट थामस के माध्यम से हुआ था। समाज में व्याप्त यह धारणा आधारहीन है कि यह ब्रिटिश राज के साथ भारत में आया। सन 52 से 2011 तक, जब अंतिम जनगणना हुई, तब तक ईसाईयों की जनसंख्या देश की कुल जनसंख्या का 2.3 प्रतिशत थी। यह दावा कोई नहीं करता कि प्रयत्नपूर्वक धर्मपरिवर्तन की एक भी घटना नहीं हुई होगी। कहीं-कहीं ऐसा हुआ होगा मगर जनगणना के आंकड़ों के आधार पर 1971 से 2011 के बीच ईसाइयों की जनसंख्या पर यदि नजर डाली जाए तो पता लगता है कि 1971 में वे कुल जनसंख्या का 2.60 प्रतिशत थे, 1981 में 2.44 प्रतिशत 1991 में 2.34 प्रतिशत और 2011 में 2.30 प्रतिशत। इन आंकड़ों से हमें दिलचस्प जानकारी मिलती है और हकीकत सामने आ जाती है। पास्टर ग्राहम स्टेन्स पर धर्मपरिवर्तन में लिप्त होने के आरोप लगाए गए थे और जिन्हें उनके दो पुत्रों टिमोथी और फिलिप के साथ जिंदा जला दिया गया था। हत्या की इस भयावह घटना की जांच करने वाले वाधवा आयोग ने अपनी रपट में यह स्पष्टतः कहा था कि क्योंझर, जहां पास्टर स्टेन्स कुष्ठ रोगियों की सेवा का कार्य करते थे, में ईसाईयों की संख्या में कोई बढ़ोतरी नहीं हुई थी। ईसाई मिशनें कई शैक्षणिक संस्थाओं और अस्पतालों का संचालन कर रही हैं और ये अत्यंत लोकप्रिय हैं। धर्मपरिवर्तन की घटनाएं आदिवासी और दलित समुदायों में अधिक हुई हैं जो दूरदराज के इलाकों शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाएं हासिल करने की कशमकश में लगे हुए हैं। यह सच है कि धर्मपरिवर्तन की अधिकांश घटनाएं दूरदराज के इलाकों में इन सुविधाओं को हासिल करने की कोशिशों के दरम्यान हुई होंगीं। धर्मपरिवर्तन के आरोपों के माध्यम से जो नफरत का माहौल बनाया जा रहा है, वह व्यापक रूप धारण कर चुका है। क्रिसमस से जुड़े कार्यक्रमों पर हमले बहुत भयावह है ऐसे मामलों में सरकार चुप्पी साध लेती है और कुछ नहीं करती। ईसाई-विरोधी हिंसा में बढ़ोतरी का एक प्रमुख कारण हैं सरकारी तंत्र की मिलीभगत। इस साल हो रहे हमले, शासक दल के दोगलेपन को जाहिर करते हैं। एक तरफ चर्च में प्रार्थना करने जाना और दूसरी तरफ गुंडों को चर्चों में तोड़फोड़ करने की छूट देना। हमें उम्मीद है कि ईसाई-विरोधी हिंसा का वैश्विक स्तर पर विरोध होगा। देश में धार्मिक स्वतंत्रता कायम रहनी चाहिए और इसके लिए अन्य देशों की सरकारों को भारत सरकार से बातचीत करनी चाहिए।

(अंग्रेजी से रूपांतरण अमरीश हरदेनिया।)

खेल/विदेश/कारोबार/फिल्म

अमेरिका में शुरू हुआ बवाल, ट्रंप को हटाने की तैयारी शुरू! टूट पड़े 17 देश

(एजेन्सी)।

जब से ट्रंप अमेरिका के राष्ट्रपति बने हैं तब से वो ऐसे बेतुके फैसले ले रहे हैं कि जो दुनिया को तो परेशान कर ही रहे हैं साथ ही अमेरिका को भी बहुत बड़ा नुकसान पहुंचा रहे हैं। ट्रंप भले ही टेरिफ से बड़ा मुनाफा कमाने का दावा कर रहे हो लेकिन जिस तरह से अमेरिका में महंगाई बेरोजगारी अचानक बढ़ी है और कंपनियां देश छोड़-छोड़ कर भाग रही है उससे साफ है कि ट्रंप अमेरिका को बर्बाद करके मानेंगे। जब से ट्रंप ने वेनेजुला पर अटैक करा कर उसके राष्ट्रपति को किडनैप कराया है तब से तो उनके खिलाफ उनके ही लोग खड़े हो गए हैं। वेनेजुला के मामले पर ट्रंप अमेरिका में ऐसे घिरे हैं कि उनकी कुर्सी खतरे में आ गई है। अब खुद ट्रंप ने ही इस डर को पूरी दुनिया के सामने जाहिर कर दिया है। बेवजह दुनिया भर के देशों से पंगे ले रहे हैं और खुद को शांतिदूत बताकर कई देशों में बवाल कटवा रहे हैं। जब ट्रंप की इन हरकतों से विपक्ष नाखुश है तो व उनकी पार्टी में भी ट्रंप के खिलाफ विरोध के सुर तेज हो गए हैं। अब हालात यह हो गए हैं कि उनकी कुर्सी कभी भी जा सकती है। खुद ट्रंप को डर सता रहा है कि उन पर महाभियोग चल सकता है। उन्होंने रिपब्लिकन सांसदों को चेतावनी दी है कि अगर उनकी पार्टी मिड टर्म चुनाव हारती है तो उनका राष्ट्रपति पद खतरे में पड़ सकता है। ट्रंप ने कहा है कि अगर डेमोक्रेटिक पार्टी को कांग्रेस में बहुमत मिला तो वे तुरंत उनके खिलाफ महाभियोग की प्रक्रिया शुरू कर सकते हैं। दरअसल मिड टर्म चुनाव हारने से ट्रंप की रिपब्लिकन पार्टी की कांग्रेस में पकड़ कमजोर हो सकती है। इससे राष्ट्रपति के कानून बनाने और बड़े फैसले लागू करने में मुश्किल आएगी।

अगर प्रतिनिधि सभा में डेमोक्रेट्स को बहुमत मिलता है तो उन्हें महाभियोग की प्रक्रिया शुरू करने का अधिकार भी मिल जाएगा। जिसे लेकर ट्रंप डरे हुए हैं। अमेरिका में मिड ट्रंप चुनाव राष्ट्रपति के 4 साल के कार्यकाल के बीच होते हैं। मिड ट्रंप चुनाव अमेरिका में सत्ता की एक बड़ी राजनीतिक परीक्षा माने जाते हैं। दरअसल अपने पहले कार्यकाल में ट्रंप दो बार महाभियोग का सामना कर चुके हैं और अब अगर उनके खिलाफ महाभियोग आया तो यह तीसरी बार होगा। महाभियोग प्रस्ताव पारित होने से उन्हें पद छोड़ना पड़ सकता है। अमेरिका के राष्ट्रपति को देशद्रोह के मामले में रिश्वत लेने या किसी अन्य गंभीर अपराध या दुष्कर्म के मामले में आरोपी होने पर या दोषी पाए जाने पर या सजा होने पर महाभियोग प्रस्ताव पास करके पद से हटाया जा सकता है।

महाभियोग प्रस्ताव पेश करने के लिए हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव के 51% मेंबर्स का बहुमत जरूरी है। तो वेनेजुला पर किए गए अटैक और मादुर के किडनैप पर विपक्षी दल डेमोक्रेटिक पार्टी का कहना है कि यह कदम बिना किसी साफ योजना और संसद से पूछे बिना उठाया गया है। इसीलिए भी ट्रंप के खिलाफ महाभियोग लाने की तैयारी है। उधर रूस, चीन, ईरान, कोलंबिया समेत 17 से ज्यादा देश वेनेजुला में की गई सैन्य कारवाही को लेकर ट्रंप के खिलाफ उतर आए हैं और विपक्ष पर यह दबाव बनाया जा रहा है कि महाभियोग प्रस्ताव लाकर ट्रंप को राष्ट्रपति पद से हटाया जाए।

आईआईएम में लौटा सुनहरा दौर, बैन और मैकिन्से जैसी बड़े फर्मों ने बढ़ाई हायरिंग और सैलरी!

(एजेन्सी)।

कैम्पस प्लेसमेंट के मौसम में इस बार कुछ अलग नजारा दिख रहा है। बता दें कि देश के शीर्ष प्रबंधन संस्थानों, खासकर भारतीय प्रबंधन संस्थानों में कंसल्टिंग और फाइनेंस कंपनियों की मौजूदगी फिर से तेज हो गई है। यह उछाल ऐसे समय में देखने को मिल रहा है, जब वैश्विक स्तर पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के चलते कई बड़ी कंपनियों में कर्मचारियों की संख्या घटाने की खबरें सामने आई हैं।

मौजूद जानकारी के अनुसार, आईआईएम कोझिकोड के निदेशक देबाशीष चटर्जी ने बताया कि अंतिम प्लेसमेंट प्रक्रिया में अब तक 594 में से 492 छात्रों को ऑफर मिल चुके हैं। उन्होंने कहा कि प्रतिस्पर्धी माहौल के बावजूद प्लेसमेंट की रफ्तार स्थिर बनी हुई है। गौरतलब है कि इस वर्ष कंसल्टिंग भूमिकाओं में लगभग 60 प्रतिशत और फाइनेंस से जुड़े ऑफर्स में करीब 10 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। चटर्जी के अनुसार, इस उछाल की बड़ी वजह भारत में जटिल और एआई-संचालित वैश्विक कार्यों की बढ़ती भूमिका है। बड़ी संख्या में ऑफर्स अब रणनीतिक और उच्च प्रभाव वाली टीमों से जुड़े हैं, क्योंकि भारत से संचालित होने वाला वैश्विक कार्यभार लगातार बढ़ रहा है। गौरतलब है कि कंसल्टिंग, बैंकिंग और एडवाइजरी फर्में हमेशा से बी-स्कूल छात्रों की पहली पसंद रही हैं। हालांकि, 2024 बैच के दौरान वैश्विक सुस्ती का असर भर्ती पर पड़ा था, लेकिन अगले बैच में इन क्षेत्रों की मांग फिर से तेज होती दिख रही है। बैन एंड कंपनी, बोस्टन कंसल्टिंग ग्रुप, मैकिन्से, एक्सेंचर के साथ-साथ जनरल अटलांटिक और टेमासेक होल्डिंग्स जैसी निवेश कंपनियां आक्रामक रूप से भर्तियां करने की तैयारी में हैं।

बैन के पार्टनर प्रभव कश्यप ने कहा कि भारत उनकी प्राथमिकता बना हुआ है और भविष्य की रणनीति के लिए सही प्रतिभा में निवेश किया जा रहा है। उन्होंने भरोसा जताया कि आईआईएम जैसे संस्थानों से निकलने वाले छात्र भविष्य के लिए मजबूत टीम तैयार करने में अहम भूमिका निभाते हैं। एक्सेंचर की भर्ती रणनीति भी ग्राहकों की एआई आधारित रणनीति और बड़े पैमाने पर बदलाव की मांग को दर्शाती है। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार, अगस्त 2025 तक के 12 महीनों में एक्सेंचर ने 4.78 अरब डॉलर का नया कारोबार जोड़ा, जो भारत की शीर्ष आईटी कंपनियों की संयुक्त वृद्धि से भी अधिक है। वहीं, सिंगापुर की टेमासेक के लिए भी भारत एक प्रमुख बाजार है और जुलाई 2025 में भारत पोर्टफोलियो के साथ उसके एसेट्स अंडर मैनेजमेंट 50 अरब डॉलर तक पहुंच गए हैं।

प्लेसमेंट से जुड़े एक अधिकारी के मुताबिक, कंसल्टिंग और फाइनेंस फर्मों द्वारा दी जा रही मीडियन सैलरी में 10 से 12 प्रतिशत की बढ़ोतरी देखी गई है। पुराने आईआईएम में यह आंकड़ा 30 से 35 लाख रुपये के आसपास बना हुआ है। आईआईएम इंदौर ने भी 2026 बैच के लिए कंसल्टिंग और फाइनेंस कंपनियों की बढ़ी दिलचस्पी की पुष्टि की है। निदेशक हिमांशु राय ने बताया कि वैश्विक अनिश्चितताओं के बावजूद भारत में भर्ती बनी हुई है, क्योंकि यहां ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर्स का विस्तार हो रहा है और भारत कार्यालय एंड-टू-एंड डिलीवरी तथा एनालिटिक्स आधारित प्रोजेक्ट्स में बड़ी भूमिका निभा रहे हैं। हालांकि, यह भी उल्लेखनीय है कि नवंबर में आई एक रिपोर्ट के मुताबिक मैकिन्से ने एआई आधारित ऑटोमेशन के चलते करीब 200 पदों में कटौती की थी। इसके बावजूद, भारत में कैंपस हायरिंग पर इसका खास असर नहीं दिख रहा है।

आईआईएम अहमदाबाद, बेंगलुरु और कलकत्ता जैसे पुराने संस्थानों में अंतिम प्लेसमेंट आमतौर पर जनवरी के अंत या फरवरी की शुरूआत में होते हैं। आईआईएम अहमदाबाद के प्लेसमेंट चेयर विस्वनाथ पिंगली के अनुसार, इस साल का माहौल पिछले कुछ वर्षों की तुलना में बेहतर नजर आ रहा है और कंसल्टिंग व फाइनेंस कंपनियों की भागीदारी मजबूत बनी हुई है।

स्टीव स्मिथ बने एशेज इतिहास में दूसरे सबसे बड़े रन-स्कोरर

(एजेन्सी)।

सिडनी क्रिकेट ग्राउंड में खेले जा रहे एशेज के पांचवें और आखिरी टेस्ट के दौरान ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट को एक और यादगार पल मिला है। बता दें कि मंगलवार, 6 जनवरी 2026 को ऑस्ट्रेलिया के अनुभवी बल्लेबाज स्टीव स्मिथ ने एशेज इतिहास में दूसरा सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी बनने का गौरव हासिल किया है। यह उपलब्धि उन्होंने मैच के दूसरे दिन ऑस्ट्रेलिया की पहली पारी के दौरान दर्ज की है।

मौजूद जानकारी के अनुसार, स्टीव स्मिथ ने इस दौरान इंग्लैंड के दिग्गज बल्लेबाज जैक हॉब्स का रिकॉर्ड पीछे छोड़ा है। हॉब्स ने एशेज में 41 मैचों की 71 पारियों में 3636 रन बनाए थे और उनका औसत 54.26 का रहा है, जिसमें 13 शतक और 15 अर्धशतक शामिल रहे हैं। वहीं स्मिथ अब 41 मैचों की 73 पारियों में 3644 रन बना चुके हैं और उनका औसत शानदार 56.93 का है, जिसमें 13 शतक और 15 अर्धशतक दर्ज हैं। गौरतलब है कि एशेज इतिहास में सर्वाधिक रन बनाने का रिकॉर्ड आज भी महान ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज सर डॉन ब्रैडमैन के नाम दर्ज है। ब्रैडमैन ने 37 मैचों की 63 पारियों में 5028 रन बनाए थे और उनका औसत अविश्वसनीय 89.78 रहा है, जिसमें 19 शतक और 12 अर्धशतक शामिल हैं।

इस मैच में स्टीव स्मिथ ने अपने टेस्ट करियर का 37वां शतक भी पूरा किया है। बता दें कि यह उनका एशेज में 13वां शतक है, जिसके साथ उन्होंने जैक हॉब्स के 12 एशेज शतकों का रिकॉर्ड भी पीछे छोड़ दिया है। एशेज में उनसे अधिक शतक अब सिर्फ डॉन ब्रैडमैन के नाम दर्ज हैं। इंग्लैंड की ओर से पूर्व कप्तान जो रूट ने पहली पारी में 160 रन की पारी खेली है। इसके साथ ही वे एशेज में सर्वाधिक रन बनाने वाले बल्लेबाजों की सूची में आठवें स्थान पर बने हुए हैं। रूट ने अब तक 39 मैचों की 74 पारियों में 2822 रन बनाए हैं और उनका औसत 41.50 रहा है, जिसमें छह शतक और 18 अर्धशतक शामिल हैं।

रणवीर सिंह की 'धुरंधर' ने रचा इतिहास!

(एजेन्सी)। रणवीर सिंह की लेटेस्ट फिल्म 'धुरंधर' ने बॉक्स ऑफिस पर कई रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। अब यह एक ही भाषा में अब तक की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली भारतीय फिल्म बन गई है। इसे 'भारतीय सिनेमा में एक मील का पत्थर' बताते हुए, जाने-माने बैनर यश राज फिल्म्स ने एक तारीफ वाली पोस्ट में टिकट काउंटरों पर इस ड्रामा की शानदार परफॉर्मेंस के लिए पूरी टीम को बधाई दी, जिसमें लिखा था, "धुरंधर सिर्फ एक फिल्म नहीं है... यह भारतीय सिनेमा में एक मील का पत्थर है जिसे हमेशा याद रखा जाएगा। आदित्य धर और जियो स्टूडियोज को अब तक की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली भारतीय फिल्म (एक ही भाषा में) बनने के लिए बधाई।" धुरंधर में हमजा अली मजारी का किरदार निभाने वाले रणवीर सिंह ने RF की पोस्ट पर जवाब दिया है। जिन्हें नहीं पता, एक्टर को फ्रकी 2010 में आई फि ल्म बैंड बाजा बारात से अनुष्का शर्मा के साथ पहला बड़ा ब्रेक मिला था। आदित्य चोपड़ा की यश राज फि ल्म्स ने धुरंधर की टीम की तारीफ करते हुए एक ओपन नोट पोस्ट किया। नोट में लिखा था, "धुरंधर सिर्फ एक फिल्म नहीं है... यह भारतीय सिनेमा में एक मील का पत्थर है जिसे हमेशा याद रखा जाएगा।"

किठाना स्वास्थ्य केंद्र पर बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम, टीबी जागरूकता पर दिया गया संदेश

गर्भवती महिलाओं, आंगनबाड़ी व आशा कार्यकर्ताओं को दिलाई गई शपथ

एसबी ब्यूरो प्रमुख/निर्मल कुमार

राजौंद। किठाना स्थित स्वास्थ्य केंद्र पर बेटी बचाओझबेटी पढ़ाओ कार्यक्रम के अंतर्गत लोगों को शपथ दिलाई गई तथा टीबी (क्षय रोग) के प्रति जागरूक किया गया। इस अवसर पर गांव किठाना की गर्भवती महिलाएं, आंगनबाड़ी मैम्बर, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, सहायिकाएं एवं आशा कार्यकर्ता उपस्थित रहीं।

कार्यक्रम में स्वास्थ्य कर्मचारी जयभगवान व सुमित्रा देवी ने बताया कि गर्भ में भ्रूण की जांच करवाना कानूनी अपराध है। हमें न तो ऐसा घिनौना कार्य करना चाहिए और न ही इसमें किसी प्रकार की भागीदारी करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि बेटियां किसी भी क्षेत्र में बेटों से कम नहीं हैं, इसलिए उन्हें भी समान शिक्षा और सम्मान मिलना चाहिए ताकि वे अपने सपनों को साकार कर सकें। भ्रूण हत्या से समाज में लिंगानुपात में असमानता पैदा होती है, जो आगे चलकर अपराध जैसी सामाजिक समस्याओं का कारण बनती है। इसके साथ ही टीबी रोग के बारे में जानकारी देते हुए बताया गया कि यह बीमारी टीबी से ग्रस्त व्यक्ति के संपर्क में आने से फैलती है। जब रोगी खांसता या थूकता है तो हवा में मौजूद जीवाणु स्वस्थ व्यक्ति की सांस के माध्यम से शरीर में प्रवेश कर जाते हैं, जिससे बीमारी फैलती जाती है।

स्वास्थ्य कर्मचारियों ने बताया कि यदि दो सप्ताह से अधिक समय तक खांसी या बुखार रहे तो तुरंत स्पुटम जांच करवानी चाहिए, जो सभी सरकारी स्वास्थ्य केंद्रों पर निःशुल्क उपलब्ध है। इसके अलावा हड्डियों की टीबी या शरीर में किसी भी प्रकार की गांठ भी टीबी का संकेत हो सकती है, इसलिए समय पर जांच जरूरी है। उन्होंने यह भी बताया कि टीबी मरीजों को सरकारी योजना के तहत मुफ्त इलाज के साथ-साथ पोषण सहायता योजना के अंतर्गत 1000 रुपये प्रति माह दिए जाते हैं, जो 6 महीनों में कुल 6000 रुपये की सहायता होती है।

कार्यक्रम के माध्यम से लोगों को बेटियों के संरक्षण, समान अधिकार और स्वास्थ्य के प्रति सजग रहने का संदेश दिया गया और भ्रूण जांच न करवाने, कन्या भ्रूण हत्या न करने की शपथ दिलाई गई।

रोहेड़ा के पास भीषण सड़क हादसा, दो की मौत, एक घायल

क्रेटा ने बाइक सवारों व महिला को मारी टक्कर, राजौंद में शोक का माहौल

एसबी संवाददाता

राजौंद। राजौंद के निकटवर्ती गांव रोहेड़ा में मंगलवार देर शाम एक दर्दनाक सड़क हादसे में दो लोगों की मौत हो गई, जबकि एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया। हादसा रोहेड़ा गांव के स्टेडियम के पास हुआ, जहां एक क्रेटा गाड़ी ने पहले बाइक को टक्कर मारी और उसके बाद सड़क किनारे बैठी महिला को अपनी चपेट में ले लिया।

प्राप्त जानकारी के अनुसार क्रेटा गाड़ी तेज गति से चल रही थी। इसी दौरान गांव रोहेड़ा अड्डे के पास उसने प्लेटिना बाइक संख्या HR08 AH 6100 को टक्कर मार दी, जो रोहेड़ा गांव की ओर से आ रही थी। बाइक चालक सुरेश कुमार पुत्र दीपा (उम्र 50 वर्ष), निवासी राजौंद टक्कर लगने से गंभीर रूप से घायल हो गया, जबकि बाइक पर पीछे बैठे संजय को भी काफी चोटें आईं। हादसे के बाद क्रेटा गाड़ी ने सड़क किनारे सीमेंट की कुर्सी पर बैठी प्यारी पत्नी हवा सिंह (उम्र 60 वर्ष), निवासी गांव रोहेड़ा को भी टक्कर मार दी, जिससे महिला की मौके पर ही मौत हो गई।

सूचना मिलते ही डायल 112 की टीम मौके पर पहुंची और घायलों सुरेश कुमार व संजय को तुरंत जिला नागरिक अस्पताल कैथल भिजवाया गया। जहां उपचार के दौरान गंभीर रूप से घायल सुरेश कुमार ने दम तोड़ दिया। वहीं संजय की हालत खतरे से बाहर बताई जा रही है। दोनों बाइक सवार राजौंद के निवासी बताए गए हैं।

घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस भी मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम की प्रक्रिया शुरू कर दी। पुलिस द्वारा मामले की जांच की जा रही है तथा आगामी कानूनी कार्रवाई अमल में लाई जा रही है। हादसे के बाद क्षेत्र में शोक की लहर है।

रक्तदान मानवता की सेवा का सबसे बड़ा प्रमाण: डीसी अपराजिता

रेडक्रॉस सोसाइटी एवं भारत विकास परिषद की ओर से किया गया रक्तदान शिविर का आयोजन

एसबी ब्यूरो प्रमुख/निर्मल कुमार

कैथल। मानवता की सेवा और रक्तदान महादान के संकल्प को आगे बढ़ाते हुए बुधवार को जिला रेड क्रॉस सोसाइटी कैथल तथा भारत विकास परिषद कैथल के संयुक्त तत्वावधान में रेडक्रॉस परिसर में एक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इसमें डीसी अपराजिता ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की और रक्तदाताओं को बैज लगाकर उत्साहवर्धन किया। वहीं विशिष्ट अतिथि के रूप में हरियाणा रेड क्रॉस सोसाइटी के पूर्व वाइस चेयरमैन डॉ. मुकेश अग्रवाल उपस्थित रहे। इस अवसर पर रक्तदाताओं को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित भी किया गया।

डीसी अपराजिता ने कहा कि रक्तदान मानवता की सेवा का सबसे बड़ा प्रमाण है। हमारे द्वारा दिया गया रक्त किसी के जीवन की बुझती हुई लौ को पुनः प्रज्वलित कर सकता है। जब किसी मरीज को एक यूनिट रक्त की जरूरत होती है और आप जैसा कोई रक्तदाता उसे रक्त प्रदान करता है तो वह उसके लिए भगवान के आशीर्वाद के समान होता है। उन्होंने कहा कि वे स्वयं भी समय समय पर रक्तदान करती हैं। रक्तदान करने से शरीर में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं आती, बल्कि शरीर स्वस्थ होता है। आपका थोड़ा सा समय और आपके रक्त की कुछ बूंदें किसी परिवार की खुशियां लौटा सकती हैं। इसलिए आज एक संकल्प लें कि हम नियमित अंतराल पर रक्तदान करेंगे और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। उन्होंने समाज सेवा के क्षेत्र में भारत विकास परिषद और रेडक्रॉस के साझा प्रयासों की भी सराहना की। डॉ. मुकेश अग्रवाल ने कहा कि इस शिविर का उद्देश्य जिले के ब्लड बैंकों में रक्त की उपलब्धता सुनिश्चित करना है ताकि आपातकालीन स्थिति में किसी भी मरीज को रक्त की कमी का सामना न करना पड़े। युवाओं ने इस शिविर में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और रक्तदान किया।

रामजी लाल ने कहा कि आपके द्वारा दान की गई रक्त की एक यूनिट तीन लोगों की जान बचा सकती है। दुर्घटनाओं, थैलेसीमिया और कैंसर जैसी बीमारियों में रक्त की निरंतर आवश्यकता बनी रहती है। एक स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए रक्त का पर्याप्त स्टॉक होना अनिवार्य है।

रक्तदान शिविर के बाद डीसी अपराजिता ने जरूरतमंद लोगों को कंबल भी वितरित किए। इस अवसर पर जिला रेडक्रॉस सचिव रामजीलाल, डॉ. अशोक गर्ग, अश्वनी अग्रवाल, सतपाल भारद्वाज, जयपाल गुप्ता, आर.पी. सिंगला विशेष रूप से उपस्थित रहे।

125 दिन की रोजगार गारंटी: विकसित भारत के संकल्प को जमीनी स्तर तक पहुंचाने की ऐतिहासिक पहल: सतपाल जांबा

संजना भारती संवाददाता

पूंडरी। भारत सरकार द्वारा लागू विकसित भारत-गारंटी फॉर रोजगार एंड आजीविका मिशन (ग्रामीण) यानी VB-G RAM G Act, 2025 ग्रामीण भारत के लिए एक क्रांतिकारी कदम साबित हो रहा है। इस अधिनियम के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में 125 दिनों के रोजगार की कानूनी गारंटी प्रदान की गई है, जिससे लाखों ग्रामीण परिवारों को स्थायी आजीविका, सुरक्षा और सम्मानजनक जीवन का आधार मिलेगा।

विधायक पूंडरी सतपाल जांबा।

विधायक सतपाल जांबा ने कहा कि इस योजना का उद्देश्य केवल रोजगार उपलब्ध कराना नहीं, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त करना, बुनियादी ढांचे को मजबूत करना, जल संरक्षण एवं जल प्रबंधन को बढ़ावा देना और आजीविका के नए अवसर पैदा करना है। इसके माध्यम से गांवों में मूलभूत सुविधाओं का विस्तार होगा और प्राकृतिक आपदाओं से निपटने की क्षमता भी विकसित होगी। उन्होंने कहा कि योजना के तहत विकसित ग्राम पंचायत योजनाएं तैयार की जाएगी, जिनमें ग्राम पंचायतों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी। पारदर्शिता बनाए रखने के लिए सामाजिक ऑडिट, सार्वजनिक सूचना बोर्ड और डिजिटल प्लेटफॉर्म का व्यापक उपयोग किया जाएगा।

विधायक सतपाल जांबा इस बिल की प्रशंसा करते हुए कहा कि 125 दिन की रोजगार गारंटी योजना प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के विकसित भारत के संकल्प को साकार करने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है। यह योजना ग्रामीण युवाओं, मजदूरों और किसानों के लिए आर्थिक सुरक्षा की मजबूत ढाल बनेगी। रोजगार के साथ-साथ इससे गांवों में विकास कार्यों को भी नई गति मिलेगी।

विधायक ने कहा कि विकसित हरियाणा के साथ-साथ विकसित पूंडरी मेरा संकल्प है। इस योजना का लाभ पूंडरी विधानसभा के प्रत्येक पात्र परिवार तक पहुंचे, इसके लिए मैं निरंतर प्रयासरत रहूंगा। रोजगार, पारदर्शिता और ग्राम विकास इस योजना की असली ताकत है।

यह योजना समग्र सरकार दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसमें केंद्र और राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं का आपसी समन्वय कर उन्हें प्रभावी रूप से जमीनी स्तर पर लागू किया जाएगा। यह पहल ग्रामीण भारत को आत्मनिर्भर बनाने, पलायन रोकने और गांवों के विकास की मुख्यधारा से जोड़ने में मील का पत्थर साबित होगी।

गुरु गोबिंद सिंह जी के प्रकाश पर्व के उपलक्ष्य में लगाया चाय पकौड़े का लंगर

संजना भारती संवाददाता

असंध। नगर में सिखों के दशम गुरु, श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के प्रकाश पर्व के अवसर पर श्रद्धा, सेवा और समर्पण का अनूठा दृश्य देखने को मिला। इस पावन अवसर पर पंजाबी गेट के आस पास दुकानदारों ने आपसी सहयोग से चाय-पकौड़ों का लंगर लगाकर श्रद्धालुओं की निस्वार्थ सेवा की। लंगर में बड़ी संख्या में राहगीरों व दुकानदारों ने प्रसाद ग्रहण किया। दुकानदारों ने मिलकर व्यवस्था संभाली और आने-जाने वाले राहगीरों को चाय पकौड़े का लंगर वितरण किया। केवल कृष्ण मदान, सिंदर सर्राफ व महावीर गर्ग ने कहा कि गुरु गोबिंद सिंह जी के बताए मार्ग त्याग, साहस और मानवता से प्रेरणा लेते हुए यह सेवा कार्य किया गया है, ऐसे आयोजनों से आपसी भाईचारे की भावना बढ़ती है।

इस अवसर पर प्रदीप गर्ग, प्रवीन पाहवा, नरेंद्र गुट, गुरबाज सिंह, नत्था सिंह माँगेवाले, अखिल मनचंदा, लक्की शेरोका, राजेश मदान, जवाहर दुआ आदि ने श्रद्धा भाव से सेवा की।

वैस्टर्न जमुना कैनाल व कर्ण पार्क सौंदर्यकरण की जल्द बनेगी डीपीआर: निगमायुक्त

एसबी विशेष संवाददाता/मदन पुरी

करनाल। शहर में नागरिक सुविधाओं से जुड़े विकास कार्यों को गति देने और गुणवत्ता सुनिश्चित करने को लेकर बुधवार को नगर निगम आयुक्त डॉ. वैशाली शर्मा ने इंजीनियरिंग विंग के अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की। करीब तीन घंटे चली बैठक में शहर में चल रहे विकास कार्यों की प्रगति और गुणवत्ता पर विस्तार से मंथन किया गया।

निगमायुक्त ने कार्यकारी अभियंता ओ.पी. करदम को निर्देश दिए कि कर्ण पार्क तथा वैस्टर्न जमुना कैनाल के सौंदर्यकरण के लिए डिटेल प्रोजेक्ट रिपोर्ट (डीपीआर) शीघ्र तैयार करवाई जाए। अधिकारियों ने बताया कि दोनों परियोजनाओं की डीपीआर लगभग 10 दिनों में तैयार कर ली जाएगी। उन्होंने पार्कों, स्ट्रीट लाइट, सीवरेज, इंटरमीडिएट पंपिंग स्टेशन, सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट तथा सामुदायिक और जन शौचालयों के संचालन व रख-रखाव की नियमित निगरानी के निर्देश दिए। साथ ही शहर में लगे फव्वारों को दुरुस्त कर उनके संचालन और रख-रखाव के लिए एजेंसी नियुक्त करने को कहा। फव्वारों की देखरेख को टेंडर प्रक्रिया में शामिल करने के निर्देश भी दिए गए।

निगमायुक्त ने स्टॉर्म वाटर निकासी व्यवस्था को स्मार्ट बनाने के लिए स्काडा परियोजना का टेंडर शीघ्र लगाने के निर्देश दिए। समीक्षा के दौरान बताया गया कि शहीद उधम सिंह चौक से मेरठ रोड टी-पॉइंट तक आउटर बाईपास रोड का सुदृढ़ीकरण कार्य प्रगति पर है। सडक पर रोड़ा बिछाने और डिवाइडर पर कर्ब स्टोन लगाने का कार्य किया जा रहा है। पुरानी अनाज मंडी क्षेत्र में कॉमर्शियल स्पेस परियोजना का कार्य भी जारी है।

निगमायुक्त ने तकनीकी विशेषज्ञ सतीश शर्मा को सीवरेज लाइनों की सफाई के लिए एक्शन प्लान तैयार करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जिन वार्डों से अधिक शिकायतें आ रही हैं, वहां प्राथमिकता के आधार पर सफाई करवाई जाए। एक्शन प्लान के तहत कार्यों के साथ-साथ शिकायतों का समयबद्ध समाधान सुनिश्चित किया जाए। बड़ी सीवरेज लाइनों की सफाई के लिए बकेट मशीन से कार्य करवाने हेतु अनुमान तैयार कर टेंडर लगाने के निर्देश भी दिए गए। डॉ. वैशाली शर्मा ने स्पष्ट किया कि शहर का विकास सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। विकास कार्यों की नियमित मॉनिटरिंग की जाए, सामग्री की गुणवत्ता सुनिश्चित हो, सैंपल लेकर जांच करवाई जाए और कार्य पूरी पारदर्शिता से किया जाए। खामी मिलने पर संबंधित अधिकारी की जवाबदेही तय की जाएगी। उन्होंने सहायक और कार्यकारी अभियंताओं को नियमित साइट विजिट करने के निर्देश दिए।

बैठक में निगमायुक्त ने जन संवाद व समाधान शिविरों में प्राप्त मांगों और शिकायतों को प्राथमिकता से निपटाने के निर्देश भी दिए। उन्होंने कहा कि कोई भी शिकायत ओवरड्यू नहीं होनी चाहिए। बैठक में तकनीकी सलाहकार महीपाल सिंह, कार्यकारी अभियंता ओ.पी. करदम व प्रदीप कल्याण, तकनीकी विशेषज्ञ सतीश शर्मा सहित सहायक व कनिष्ठ अभियंता उपस्थित रहे।

राजौंद में टूटे-फूटे बिजली मीटर बने खतरे का सबब, हादसों की आशंका

एसबी ब्यूरो प्रमुख/निर्मल कुमार

राजौंद। नगर राजौंद में जगह-जगह लगे टूटे-फूटे बिजली मीटर और मीटर बॉक्स अब आमजन के लिए गंभीर परेशानी और खतरे का कारण बनते जा रहे हैं। विशेष रूप से सरकरे बाजार और टी-प्वाइंट क्षेत्र में लगे बिजली मीटरों की स्थिति अत्यंत दयनीय है। यहां संकरी सड़क होने के कारण प्रतिदिन वाहन मीटरों को छूते हुए निकलते हैं, जिससे कभी भी बड़ा हादसा होने की आशंका बनी रहती है।

राजौंद मेन बाजार में टूटे-फूटे मीटर मीटर बाक्स। (छाया: एसबी)

स्थानीय नागरिकों व दुकानदारों राजेश कुमार, अशोक कुमार, राजीव कुमार, निर्मल सिंह, नरेश और नवीन ने बताया कि इन टूटे-फूटे मीटर बॉक्स को बदलवाने व मीटर बाक्स दूसरे खम्बे पर शिफट करने के लिए कई बार बिजली विभाग के जेई साहब सिंह से निवेदन किया जा चुका है। हर बार उन्हें आश्वासन तो मिला, लेकिन समस्या का समाधान आज तक नहीं हो सका। लोगों का कहना है कि मीटर बॉक्स टूटे होने के कारण खुले तार दिखाई देते हैं, बिजली मीटर हवा में झूल रहे हैं, जो राहगीरों, दुकानदारों और वाहन चालकों के लिए जानलेवा साबित हो सकते हैं।

नागरिकों ने बताया कि बाजार क्षेत्र में दिनभर भीड़ रहती है। ऐसे में अगर किसी दिन कोई बड़ा हादसा हो गया तो उसकी भरपाई संभव नहीं होगी। इसके बावजूद बिजली विभाग की ओर से अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई है, जिससे लोगों में भारी रोष व्याप्त है।

पीड़ित नागरिकों और दुकानदारों ने बिजली विभाग के एसडीओ, एक्सईएन, एसई सहित मुख्यमंत्री हरियाणा नायब सिंह सैनी, विभाग मंत्री अनिल विज से भी मांग की है कि राजौंद नगर में लगे सभी टूटे-फूटे मीटर बॉक्स को शीघ्र बदलवाया जाए और सुरक्षित स्थानों पर नए मीटर स्थापित किए जाएं। उनका कहना है कि समय रहते कार्रवाई नहीं हुई तो किसी भी दिन जान-माल का बड़ा नुकसान हो सकता है, जिसकी जिम्मेदारी पूरी तरह विभाग की होगी।

लोगों ने चेतावनी दी है कि यदि जल्द समाधान नहीं हुआ तो वे मजबूर होकर उच्च अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों के समक्ष अपनी आवाज बुलंद करेंगे। अब देखना यह है कि बिजली विभाग इस गंभीर समस्या पर कब तक संज्ञान लेता है। मामले के बारे में एसडीओ बिजली विभाग राजौंद सत्यवान सिंह से बात की गई तो उन्होंने कहा कि कल मामले की जांच कर उचित समाधान करवाया जाएगा।

सेन्ट्रल बार के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का हुआ सम्मान

■ मिथिला चेंबर में आयोजित हुआ सम्मान समारोह

एसबी संवाददाता

वाराणसी। बुधवार को जिला पंचायत रोड, कचहरी स्थित बनारस एडवोकेट गिल्ड के बैनर तले मिथिला विधिक सहायता केंद्र में सेंट्रल बार एसोसिएशन के नवनिर्वाचित अध्यक्ष और महामंत्री का सम्मान हुआ।

सेन्ट्रल के नवनिर्वाचित अध्यक्ष प्रेम प्रकाश सिंह गौतम (दायें) और महामंत्री आशीष सिंह को सम्मानित करते हुए गौतम झा। (छाया: एसबी)

संस्था के अध्यक्ष गौतम कुमार झा (एडवोकेट)और वरिष्ठ अधिवक्ता राजेन्द्र त्रिवेदी ने सेन्ट्रल के नवनिर्वाचित अध्यक्ष प्रेम प्रकाश सिंह गौतम और महामंत्री आशीष सिंह को पाग, दुपट्टा, माला और विश्वनाथ जी चित्र देकर सम्मानित किया। अपने सम्मान से अभिभूत प्रेम प्रकाश सिंह गौतम ने कहा की मेरे कार्यकाल में अधिवक्ताओं से सम्बंधित मामलों का त्वरित और निष्पक्ष निस्तारण होगोमहामंत्री आशीष सिंह ने कहा कि बार और बेंच एक दुसरे के पूरक हैं दोनों में सामंजस्य बना रहे यह हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता रहेगी। सम्मान समारोह में नित्यानंद राय, सुरेन्द्र पाण्डेय, वरिष्ठ अधिवक्ता राजेन्द्र त्रिवेदी, मनोज कपूर, निरसन कुमार झा, शिवेन्द्र पाठक, राहुल श्रीवास्तव, विशाल सेठ, आकाश यादव बादल, विशाल साहू, अजय गोंड, होरी लाल, एसपी यादव आदि अधिवक्ता उपस्थित थे।

एनएसएस युवाओं को राष्ट्र निर्माण से जोड़ने का सशक्त माध्यम: डॉ. वीरेंद्र सिंह चौहान

एसबी विशेष संवाददाता/मदन पुरी

करनाल। राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) का गठन वर्ष 1969 में युवाओं को राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया से जोड़ने के उद्देश्य से किया गया था। एनएसएस का मूल मंत्र मैं नहीं, आप समाज सेवा, सहयोग और संवेदनशीलता की भावना को सुदृढ़ करता है। यह विचार हरियाणा ग्रामीण विकास संस्थान के निदेशक डॉ. वीरेंद्र सिंह चौहान ने पीएम श्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, नीलोखेड़ी में आयोजित राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय विशेष शिविर के समापन समारोह को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

समारोह में विद्यालय की प्रधानाचार्या रजनी वर्मा, जिला एनएसएस समन्वयक सुभा सिंह एवं एनएसएस अधिकारी महेंद्र सिंह ने मुख्य अतिथि डॉ. चौहान का पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया।

डॉ. वीरेंद्र सिंह चौहान ने कहा कि एनएसएस शिविर विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता, अनुशासन, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा सामूहिक कार्य संस्कृति को मजबूत करता है। उन्होंने विद्यार्थियों को अपनी मातृभूमि के प्रति कर्तव्यनिष्ठ, जागरूक और जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि देश की प्रगति तभी संभव है जब युवा पीढ़ी शिक्षा के साथ-साथ समाज सेवा, स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण और मानवीय मूल्यों को अपने जीवन का हिस्सा बनाए। उन्होंने शिविर में भाग लेने वाले स्वयंसेवकों द्वारा किए गए सामाजिक कार्यों, जागरूकता अभियानों और अनुशासित गतिविधियों की सराहना करते हुए भविष्य में भी सेवा भाव से जुड़े रहने का आह्वान किया।

डॉ. चौहान ने चार साहिबजादों के महान बलिदान को श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हुए कहा कि उनका जीवन साहस, त्याग, सत्य और धर्म के मार्ग पर अडिग रहने की अनुपम मिसाल है। उन्होंने विद्यार्थियों से ऐसे महान बलिदानों से प्रेरणा लेकर नैतिक मूल्यों को आत्मसात करने का आह्वान किया। समारोह के दौरान विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रमों और एनएसएस गतिविधियों की झलक ने सभी उपस्थितजनों को प्रभावित किया। शिविर के दौरान किए गए कार्यों की व्यापक प्रशंसा की गई।

इस अवसर पर विजय कुमार (अंग्रेजी अध्यापक), बलराज (लिपिक), प्रीति लाल (पीजीटी जीवविज्ञान), पत्रकार पवन कुमार, मुलख राज, राजेंद्र मिड्ढा सहित अनेक गणमान्य नागरिक, शिक्षकगण, एनएसएस स्वयंसेवक एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

क्रिएटिविटी पर बोलीं टिस्का चोपड़ा

बॉलीवुड अभिनेत्री टिस्का चोपड़ा ने साल 2025 में निर्देशन की दुनिया में कदम रखा है। उन्होंने थ्रिलर फिल्म 'साली मोहब्बत' का निर्देशन किया है। यह फिल्म ओटीटी पर रिलीज हुई थी और फिल्म को मिले-जुले रिएक्शन हासिल हुए थे। अब टिस्का का ऐसा मानना है कि बॉलीवुड में क्रिएटिव नजरिए से रिस्क लेने से मेकर्स काफी घबराते हैं और वो राइटिंग पर कम ध्यान देते हैं।

हम लेखकों को प्रोत्साहित नहीं करते

बॉलीवुड बबल के साथ बातचीत के दौरान टिस्का चोपड़ा ने बॉलीवुड में होने वाले बदलावों को लेकर बात की। साथ ही उन्होंने इंडस्ट्री की उन कमियों का भी जिक्र किया, जिन्हें दूर किया जाना बहुत जरूरी है। एक्ट्रेस ने कहा कि समस्या यह है कि हम फलों को पानी दे रहे हैं, जड़ों को नहीं, यानी लेखन को। काम बेहद सतही हो गया है। मैं यह नहीं कह रही कि कॉमर्शियल या कॉमेडी फिल्में नहीं बन सकतीं, लेकिन इसकी शुरुआत राइटिंग से होती है। आपको अपने लेखकों को समय देना होगा और उन्हें आइडियाज पर सोचने की आजादी देनी होगी, तभी वो कुछ क्रिएटिव सोच पाएंगे। लेकिन हम लेखकों को प्रोत्साहित नहीं करते। हम बहुत डरे हुए हैं। कोई भी जोखिम नहीं लेना चाहता। हम वही पुरानी चीजें थोड़े-बहुत बदलाव के साथ करते रहते हैं। दर्शक अब इसे पसंद नहीं कर रहे हैं। जब आप दृढ़ विश्वास के साथ कुछ नया लाते हैं, तो लोग उसे स्वीकार कर लेते हैं।

कई और दिग्गज भी क्रिएटिविटी को लेकर कर चुके हैं बात

टिस्का चोपड़ा से पहले भी कई दिग्गज बॉलीवुड में लेखकों को प्रोत्साहित करने और राइटिंग में कुछ क्रिएटिव करने की बात कह चुके हैं। धुरंधर की तारीफ करते हुए अधिकांश लोगों ने फिल्म की राइटिंग और उसके तकीनीकि पक्ष की तारीफ की है। इनमें ऋतिक रोशन, सुधीर मिश्रा और राम गोपाल वर्मा जैसे दिग्गजों के नाम शामिल हैं।

शालिनी पांडे ने की राहु-केतु पर बात

अभिनेत्री शालिनी पांडे इन दिनों अपनी आगामी फिल्म राहु केतु को लेकर चर्चा में हैं। इस फिल्म में वे वरुण शर्मा और पुलकित सम्राट के साथ स्क्रीन शेयर करती दिखेंगी। कुछ दिन पहले फिल्म का पहला मोशन पोस्टर रिलीज किया गया था और अब मेकर्स की तरफ से इसका लेटेस्ट टीजर रिलीज किया गया है। एक्ट्रेस ने अपने किरदार पर दिलचस्प खुलासा किया।

शालिनी आप राहु और केतू के बीच फंस गई हैं?

मैं फंसी नहीं हूं। मेरा किरदार बहुत अच्छा है।

आपको इस किरदार में किस चीज ने प्रभावित किया?

डायरेक्टर विपुल सर ने जब इसे नैरेट किया तो लगा यह बहुत अलग तरह की कॉमेडी है। यह इंटेलीजेंट कॉमेडी फिल्म है। मुझे लगता है कि मेरे लिए राइटर और डायरेक्टर एक हों तो मैं भी उन पर भरोसा कर सकूं।

शालिनी, हर किरदार इंसान को काफी कुछ सिखाकर जाता है। आपको इस फिल्म ने क्या सिखाया?

यह जो किरदार है, वह बहुत लेयर्ड है। आमतौर पर लड़कियों के किरदार बहुत ब्लैक एंड व्हाइट तरीके से देखते हो। मुझे यह किरदार करते हुए बहुत फ्री फील हुआ। विपुल सर (विपुल विग) को इसके लिए शुक्रिया कि उन्होंने इस रोल को लिखा और मुझे इसे प्ले करके बहुत मजा आया।

फिल्म का नाम क्योंकि राहु केतू है, क्या आप एस्ट्रोलॉजी में यकीन रखती हैं? क्या आपने कभी ऐसा पढ़ा कि आज मेरी राशि में क्या लिखा है?

जब अच्छी चीजें होती हैं तो मैं भरोसा कर लेती हूं। बाकी मैं पढ़ती नहीं हूं। मेरी मम्मी इतनी स्वीट हैं। जब वो मेरे पास आती हैं और कुछ करने को बोलती हैं तो मैं उनकी खुशी के लिए कर लेती हूं।

क्या सोशल मीडिया पर प्रेशर फील होता है?

सोशल मीडिया और मोबाइल के साथ रिलेशनशिप अलग चीज है। मेरा और स्क्रीन का रिलेशन वहीं तक है, जहां तक मेरा काम है। मैं अपने दर्शकों से रूबरू होती हैं सोशल मीडिया से, लेकिन मैंने अपना दायरा बना रखा है। मेरा रिश्ता सोशल मीडिया से बहुत अच्छा है।

क्या आप पब्लिक का रिएक्शन देखने के लिए छिपकर हॉल में फिल्म देखने गए हो लोगों के बीच जाकर?

हर एक्टर ऐसा करता है। हमने कितने सीन लोगों के बीच जाकर देखे हैं। हर एक्टर उस हाइप के लिए जीता है। मैंने अर्जुन रेड्डी के टाइम यह बहुत किया है। यह बहुत सुंदर फीलिंग है।

आपनी फिल्म राहु केतू के बारे में क्या कहना चाहेंगी?

यह बहुत इमोशनल इंटेलीजेंस फिल्म है। सब इस फिल्म के साथ कुछ न कुछ रिलेट कर सकते हैं।

जल्द रिलीज होगा कुणाल खेमू स्टारर सिंगल पापा का दूसरा सीजन

कुणाल खेमू की हालिया रिलीज वेब सीरीज सिंगल पापा को दर्शकों और क्रिटिक्स ने जमकर सराहा था। अब जल्द ही इस सीरीज का दूसरा पार्ट रिलीज होने वाला है। नेटफ्लिक्स ने हाल ही में इसकी आधिकारिक घोषणा की है।

नेटफ्लिक्स ने किया सीजन 2 का एलान

सोमवार को नेटफ्लिक्स ने अपने ओटीटी प्लेटफॉर्म पर आने वाली सीरीज सिंगल पापा 2 की घोषणा की। उन्होंने एक सोशल मीडिया पोस्ट के जरिये यह जानकारी दर्शकों को दी। इसे शेयर करते हुए नेटफ्लिक्स ने लिखा 'बधाई हो, सीजन 2 होने वाला है।' हालांकि, ओटीटी प्लेटफॉर्म ने अब तक इसकी रिलीज डेट अनाउंस नहीं की।

फैंस ने की यह खास अपील

नेटफ्लिक्स की इस पोस्ट पर सीरीज के कई फैंस ने खास अपील की है। एक यूजर ने कमेंट करके लिखा, 'इस बार दया शेट्टी का रोल ज्यादा रखना..'। वहीं कई फैंस ने इस खबर पर खुशी भी जाहिर की कि इस सीरीज का दूसरा पार्ट आ रहा है। कइयों ने लिखा कि वो सीजन के लिए बेहद उत्साहित हैं।

नजर आएंगे ये बड़े कलाकार

यह सीरीज इशिता मलहोत्रा और नीरज उधवानी के जगरनॉट प्रोडक्शंस के बैनर तले बनाई गई है। इसे शशांक खैतान, हितेश केवल्या और नीरज उधवानी ने ही निर्देशित किया है। सीरीज में कुणाल खेमू, प्राजक्ता कोली, मनोज पहवा, आयशा रजा, नेहा धूपिया, सुहेल नय्यर, दयानंद शेट्टी और ईशा तलवार समेत कई कलाकार नजर आएंगे।

पहले सीजन में क्या थी कहानी

सिंगल पापा की कहानी एक ऐसे तलाकशुदा इंसान गौरव गहलोत की है जिसकी कार में कोई बच्चा छोड़ जाता है। इसके बाद गौरव उस बच्चे को पालना चाहता है मगर परिवार उसके लापरवाह होने की चलते उसके इस फैसले का साथ नहीं देता। आगे जाकर गौरव उस बच्चे को अकेले संभालता है। अब गौरव के जीवन में क्या नए बदलाव होंगे, यह कहानी दर्शकों को इसके दूसरे भाग में देखने को मिलेगी।

कभी खुशी कभी गम 2 के सीक्वल की तैयारी में करण जौहर!

कभी खुशी कभी गम 2 को लेकर एक बड़ा अपडेट सामने आया है। दावा किया जा रहा है कि करण जौहर इस मूवी से बतौर डायरेक्टर कमबैक करने जा रहे हैं। 25 साल पहले आई इस मूवी का सीक्वल कब बनेगा और कौन होगा, जानिए-

कभी खुशी कभी गम 2 के बारे में जानकारी सामने आई है

साल 2001 में करण जौहर की डायरेक्टेड फिल्म कभी खुशी कभी गम रिलीज हुई थी। इसे यश जौहर ने प्रोड्यूस किया था और 3 घंटे 30 मिनट लंबी इस मूवी को लोगों का भरपूर प्यार भी मिला था। इसके गाने आज भी लोगों के जुबां पर बैठे रहते हैं। अब खबर है कि इस मूवी का पार्ट-2 भी बना रहे हैं। और इसके जरिए ही वह डायरेक्शन में कमबैक कर रहे हैं। चर्चा ये भी है कि प्रोजेक्ट की स्क्रिप्ट भी फाइनलाइज हो गई है और जल्द ही इसकी शूटिंग शुरू हो सकती है। रिपोर्ट के मुताबिक, एक सोर्स ने बताया है कि रॉकी और रानी की प्रेम कहानी जैसी रोमांटिक फैमिली कॉमेडी से मिली अपार सफलता के बाद करण जौहर अपनी अगली फैमिली-ड्रामा जॉनर मूवी के साथ वापसी करने का प्लान बना रहे हैं। कहा ये भी जा रहा है कि अब तक की उनकी सबसे बजट की फिल्म होगी और नए साल के शुरुआत में स्क्रिप्ट फाइनल करके उन्होंने लोगों की एक्साइटमेंट बढ़ा दी है।

खबरों के मुताबिक, इस फिल्म को धर्मा प्रोडेक्शन के बैनर तले बड़े पैमाने पर सिनेमाघरों में रिलीज करने की प्लानिंग हो रही है। प्री-प्रोडक्शन का काम 2026 के छमाही के आसपास शुरू होने की उम्मीद है। और शूटिंग साल के अंतर तक शुरू होने की संभावना है। एक सोर्ट ने ये भी बताया है कि ये एक हाई-ऑक्टेन फैमिली ड्रामा मूवी है। जिसमें बहुत रोमांटिक और इमोशनल एंगल भी है।

कभी खुशी कभी गम 2 की कास्ट

फिल्म की कास्ट के बारे में ये बताया गया है कि इसमें दो मेन लीड एक्टर और दो मेन लीड एक्ट्रेस होंगी। कास्टिंग का प्रॉसेस भी जल्द शुरू होगा। यह धर्मा प्रोडक्शंस की सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली बड़ी फिल्म होगी। इसका नाम कभी खुशी कभी गम 2 होगा। लेकिन पुष्टि नहीं हुई है। कभी खुशी कभी गम में शाहरुख खान, काजोल, ऋतिक रोशन, करीना कपूर, अमिताभ बच्चन और जया बच्चन जैसे दिग्गज कलाकार थे। 14 दिसंबर, 2001 में ये रिलीज हुई थी और बॉक्स ऑफिस पर ब्लॉकबस्टर साबित हुई थी।

क्या 'डियर कॉमरेड' के हिंदी रीमेक में नजर आएंगे सिद्धांत चतुर्वेदी और प्रतिभा रांटा? एक्टर्स ने बताई सच्चाई

फिल्म 'गली बॉय' से सुर्खियों में आए अभिनेता सिद्धांत चतुर्वेदी इन दिनों अपनी आगामी फिल्म 'वी शांताराम' को लेकर चर्चाओं में हैं। हालांकि, इस बीच पिछले कुछ दिनों से सोशल मीडिया पर ये चर्चा तेज है कि सिद्धांत चतुर्वेदी अभिनेत्री प्रतिभा रांटा के साथ विजय देवरकोंडा की फिल्म 'डियर कॉमरेड' के हिंदी रीमेक में नजर आएंगे। दोनों स्टार्स की कास्टिंग को लेकर सोशल मीडिया पर चर्चाएं फैलने लगीं। अब दोनों स्टार्स ने खुद इस मामले पर प्रतिक्रिया देते हुए सभी तरह की चर्चाओं पर विराम लगा दिया है।

फिलहाल कोई रीमेक नहीं

सिद्धांत चतुर्वेदी ने सबसे पहले इन अफवाहों पर अपना रुख स्पष्ट किया। 'डियर कॉमरेड' में अपनी कास्टिंग की खबरों को खारिज करते हुए सिद्धांत ने अपने इंस्टाग्राम पर एक स्टोरी शेयर की। इस स्टोरी में अभिनेता ने लिखा, 'दोस्तों, मैं स्पष्ट कर दूं कि यह सच नहीं है। अब मेरे लिए कोई रीमेक नहीं, हालांकि मैं मूल फिल्म और अभिनेताओं का प्रशंसक हूं, बहुत सारा प्यार और सम्मान। धन्यवाद।' इस स्टोरी के जरिए सिद्धांत ने इन खबरों पर तो विराम लगाया ही, साथ ही ये भी स्पष्ट कर दिया कि वो फिलहाल अब किसी भी रीमेक फिल्म में काम नहीं करना चाहते।

प्रतिभा रांटा के साथ काम करना चाहते हैं सिद्धांत

हालांकि, सिद्धांत ने इस दौरान प्रतिभा रांटा के साथ काम करने की इच्छी भी जताई। अपनी स्टोरी में उन्होंने आगे लिखा, 'मैं बेहद प्रतिभाशाली प्रतिभा रांटा के साथ किसी ऐसे प्रोजेक्ट पर काम करना चाहूंगा, जो नई कहानी हो। इसका बेसब्री से इंतजार है।' जाहिर है कि सिद्धांत किसी रीमेक की बजाय एक नई कहानी पर काम करना चाहते हैं।

सिद्धांत आखिरी बार 'धड़क 2' में नजर आए थे

वर्कफ्रंट की बात करें तो सिद्धांत को आखिरी बार 'धड़क 2' में देखा गया था। समीक्षकों द्वारा सराही गई ये फिल्म तमिल फिल्म 'परियेरुम पेरुमल' का रीमेक थी। जबकि प्रतिभा रांटा आखिरी बार 'लापता लेडीज' में ही नजर आई थीं। अब वो द रिवोल्यूशनरीज नाम की वेब सीरीज में नजर आएंगी।

प्रतिभा रांटा ने भी दिया रिएक्शन

सिद्धांत चतुर्वेदी की तरह ही प्रतिभा रांटा ने भी 'डियर कॉमरेड' में अपनी कास्टिंग की चर्चाओं पर प्रतिक्रिया दी। हालांकि, एक्ट्रेस ने इन खबरों का खंडन या इनकी पुष्टि नहीं की, लेकिन उन्होंने अपने नाम पर फैलाई जा ही गलत खबरों पर जरूर अपनी प्रतिक्रिया दी। एक्ट्रेस ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर लिखा, 'मैं सभी मीडिया पेजों से विनम्रतापूर्वक अनुरोध करती हूं कि कृपया किसी भी अपुष्ट जानकारी को प्रकाशित या प्रसारित करने से बचें। आधिकारिक घोषणा का इंतजार करें। मेरे साथ काफी समय से ऐसा हो रहा है, कई ऐसे प्रोजेक्ट्स में जिनसे मैं जुड़ी नहीं हूं, जिससे अक्सर अनावश्यक भ्रम पैदा होता है। इस मामले में आपकी समझ, सहयोग और निरंतर समर्थन के लिए मैं वास्तव में आभारी रहूंगी।' जाहिर है कि प्रतिभा रांटा ने सिद्धांत की तरह साफ तौर से इस बात से इंकार नहीं किया कि वो रीमेक में नजर नहीं आएंगी। बल्कि उन्होंने आधिकारिक घोषणा होने का इंतजार होने की बात कही है।